श्रद्धामयोऽयं पुरुषो
यो यच्छ्रद्धः स एव सः।

● श्रीमद् भगवदगीता 17/3

अर्थात् - यह मनुष्य श्रद्धा रूप से है। जो जैसी श्रद्धा रखता है, वह वैसा ही बन जाता है। अपनी आस्था, अपनी मान्यता, अपनी आकांक्षा एवं अपनी दृष्टि ही अपने व्यक्तित्व का निर्माण करती है और उसी आधार पर उठने, गिरने की परिस्थितियाँ बनती हैं। विकृत दृष्टिकोण ही हमें नरक में धकेलता है और उसके परिष्कृत होने पर स्वर्ग हाथ बाँधकर सामने आ खड़ा होता है।

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

Postal R.No. UA/DO/16/2015-2017, RNI-NO.38653/80

संस्थापक-संरक्षक : युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 जनवरी 2015 (वर्ष-27, अंक-13) शांतिकुंज, हरिद्वार वार्षिक चंदा ₹ 40/-, विदेश में ₹ 500/-

E-mail : news.shantikunj@gmail.com news@awgp.in

नये वर्ष में नयी सोच के साथ बनायें अपना बेहतर भविष्य

संसार सुख-दुःख का संगम

यह संसार जिन तत्त्वों से बना है, उनमें भलाई-बुराई, नेकी-बदी, कुरूपता-सुंदरता, अनुकूलता-प्रतिकूलता के परस्पर विरोधी स्तरों का समावेश है। इन दोनों ही परिस्थितियों से कोई बच नहीं सकता। समुद्र की बनावट ही ऐसी है कि उसमें ज्वार-भाटे आते रहते और हर वस्तु हिलती रहती है। परमाणुओं से लेकर सौर मण्डल की धूम है, इतना ही नहीं उसके साथ ही प्रिय-अप्रिय भी जुड़ा है। यदि अपने चिन्तन को मात्र अप्रिय निषेधात्मक पक्ष के साथ जोड़ा जाय तो दुःखदायी घटनायें ही स्मरण रहेंगी और उन्हीं का स्मरण बाद में भी बना रहेगा। जो प्रिय एवं अनुकूल है, वह सरसरी नजर से देखने पर आँखों के आगे से निकल जायेगा, उसकी विशेषता और स्थिति भी अनुभव में न आ सकेगी। निषेधात्मक चिन्तन के कारण जो श्रेष्ठ है, वह भी निकृष्ट प्रतीत होगा। रंगीन काँच का चश्मा पहन लेने पर सभी वस्तुएँ उसी रंग में रंगी हुई दिखाई पड़ती हैं।

यदि अपना चुनाव अशुभ के पक्ष में हो तो असंख्य लोगों में असंख्यों प्रकार की बुराइयाँ दीख पड़ेंगी। अपने साथ किसने क्या और कैसा दुर्व्यवहार किया है? यदि इसकी स्मृति दौड़ाई जाय तो प्रतीत होगा कि संसार में दानव स्तर के लोग ही रहते हैं और अनीतिपूर्ण अनाचार करने में ही निरत रहते हैं। अपने को कब, कितने दुःख भुगतने पड़े और दूसरों में से किसको कितने दुःख दिये? इसकी गणना करने पर प्रतीत होता है कि यह संसार सचमुच ही नरक है-भवसागर है। यहाँ से जितनी जल्दी, जिस प्रकार भी सम्भव हो छुटकारा पाना चाहिए। ऐसी मनःस्थति में जीवन भार रूप बन जाता है और उसका प्रभाव उद्विग्न-अशान्त बने रहने के रूप में ही सामने आता है। यहाँ तक कि इस ऊबड़-खाबड़ दुनिया को बनाने वाले के प्रति भी आक्रोश उत्पन्न होता और भरपेट गाली देने को मन करता है। प्रतिकूलताएँ ही सर्वत्र छाई देखकर मनुष्य नास्तिक स्तर का बन जाता है, उसे कोई भी विश्वसनीय नहीं जँचता, सबके प्रति अविश्वास रहता है।

इसके विपरीत एक दूसरा दृष्टिकोण भी है, उसके अनुरूप अपनी दृष्टि बदल लेने पर समूचा दृश्य ही बदल जाता है और सुन्दरता, सज्जनता एवं सदाशयता का माहौल इतना बड़ा दीखता है, जिसे देखते हुए लगता है कि भलाई की भी कहीं कमी नहीं। ईश्वर ने ऐसी अद्भुत विशेषताओं वाला शरीर दिया, साथ ही जादू की पिटारी जैसा मनःसंस्थान भी। अभिभावकों और कुटुम्बियों की दुलार भरी उदारता की एक घटना का स्मरण किया जाय तो प्रतीत होगा कि वे औरों के लिए कैसे भी क्यों न हों, अपने लिए तो देवतातुल्य ही रहे हैं। मित्र, सहपाठियों का स्नेह-सौजन्य, अध्यापकों का ज्ञानदान ऐसे पक्ष हैं, जिनकी उपलब्धि बिना वह स्थति न आ पाती जो आज है।

पत्नी का सौजन्य और सेवाभाव यदि उदार दृष्टि से देखा जाय तो प्रतीत होगा कि वह किसी भी प्रकार ऐसा नहीं है, जिसे देवोपम न माना जाय। घर को खुशी और किलकारियों से भर देने वाले बच्चों को, परिवार के अन्यान्य आश्रितजनों को सभी की सद्भावना मिलती है। समाज का ऐसा सुगठन है जिसमें आजीविका के साधन सहज ही उपलब्ध हो जाते हैं। दैनिक उपयोग की इतनी, इतने प्रकार की वस्तुयें मिलती रहती हैं, जिनके सहारे प्रसन्नता और तृप्ति ही मिलती रहती है।

प्रकृति की ओर दृष्टि उठाकर देखा जाय तो चलते-फिरते खिलौनों जैसे पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, सरिता-सरोवर, पहाड़-वन, सूर्य-चन्द्र और तारागण, बादलों वाला आकाश, वृक्ष-वनस्पतियाँ सभी कुछ ऐसा है, जिसका मनोरम सौन्दर्य देखते-देखते मन नहीं भरता।

सत्प्रयोजनों में संलग्न, चरित्रवान, उदारमना मनीषियों की खोज की जाय तो उनकी गाथाओं से इतिहास भरा पड़ा मिलेगा। आज भी उनकी कमी नहीं है। संख्या भले ही कम हो और वे निकट नहीं दूर रहते हों, किन्तु उनका अस्तित्व इतना अवश्य है कि प्रसन्नता व्यक्त की जा सके और सन्तोष की साँस ली जा सके।

तथ्य एक ही है कि अपना दृष्टिकोण किस स्तर का है? उद्यान में भौंरे को सुगन्ध की मस्ती और मधुमक्खियों को शहद की मंजूषाएँ लटकती दीखती हैं, पर गुबरीला कीड़ा पौधों की जड़ों में लगे हुए सड़े गोबर तक जा पहुँचता है और सर्वत्र दुर्गन्ध ही दुर्गन्ध पाता है।

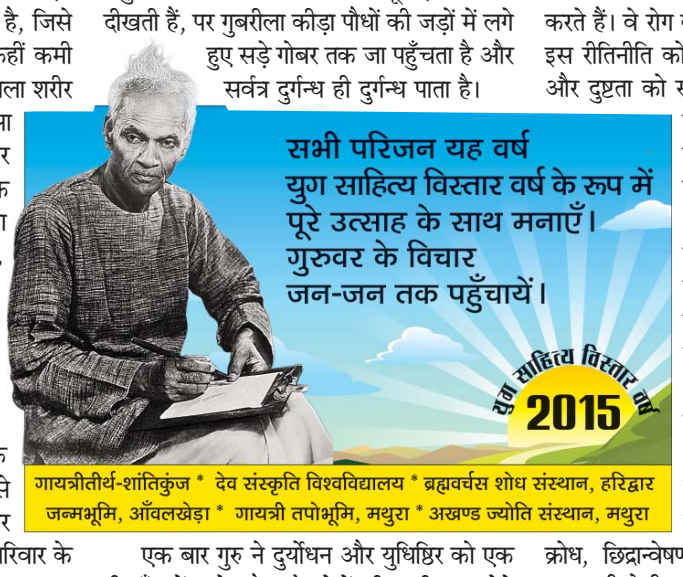

एक बार गुरु ने दुर्योधन और युधिष्ठिर को एक ही गाँव में भले और बुरे लोगों की सूची बना लेने के लिए भेजा। दुर्योधन को सभी दुष्ट और युधिष्ठिर को सभी सज्जन दीखे। वहाँ थे दोनों ही प्रकार के लोग, पर अपने दृष्टिकोण के अनुरूप उनने उसी नजर से देखा तो उन्हें बहुलता अपनी खोजबीन के अनुरूप ही दिखाई दी।

संसार में बुराइयाँ न हों सो बात नहीं है, पर वे ऐसी हैं कि उन्हें सुधारने के माध्यम से हम अपना पुरुषार्थ जगा सकें, प्रगतिशीलता का परिचय दे सकें। अनीति न हो तो संघर्ष किससे किया जाय? शौर्य-साहस प्रकट कर सकने का अवसर किस प्रकार आये?

सुधारवादी दृष्टि अपनायें

दुष्टता की उपेक्षा की जाय या उसे सहते रहा जाय, बढ़ने दिया जाय; यह कोई नहीं कहता। उन्हें सुधारने के लिए भी भरपूर प्रयास करना चाहिए, पर इसमें खीजने की, असन्तुलित होने की आवश्यकता नहीं है। डॉक्टर को सारे दिन उन्हीं के बीच रहना पड़ता है, जिनने असंयम बरतकर अपने स्वास्थ्य को बिगाड़ लिया है। वे उनके घाव धोते, मरहम लगाते और आवश्यकतानुसार चीर-फाड़ भी करते हैं। वे रोग को मारते और रोगी को बचाते हैं। इस रीतिनीति को अपनाकर कुरूपता को सुन्दरता और दुष्टता को सज्जनता में बदला जा सकता है। प्रेम-सौजन्य से काम न चलता हो तो आवश्यकतानुसार दण्ड की नीति भी अपनाई जा सकती है और प्रताड़ना का प्रयोग भी किया जा सकता है, पर इसमें भी अपनी सुधार-परायण सज्जनता की भाव-संवेदना का ही अनुभव प्रयुक्त किया जा सकता है।

फिर अपनी निज की सद्भावना ही अपने लिए कम आनन्ददायक नहीं होती। वस्तुतः मनुष्य उद्विग्न अपने दृष्टिकोण के कारण ही होता है। ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, छिद्रान्वेषण, असन्तोष, असंयम आदि के कारण ही ऐसी मनःस्थिति बनती है, जिसमें खीज, खिन्नता और विद्वेष से मन भरा रहता है। कभी स्वल्प कारण होने पर भी तिल का ताड़ बनता है और चिन्ता, भय, निराशा, आशंका, अविश्वास आदि मनोविकारों का समूह चढ़ दौड़ता है और स्थिति ऐसी पैदा कर देता है, जिसमें चैन से रहना और सम्पर्क वालों को चैन से रहने देना बन ही नहीं पड़ता।

स्मरण रखने योग्य यह है कि अंधकार कितना ही विस्तृत क्यों न हो, पर वह प्रकाश से अधिक मात्रा में नहीं हो सकता। संसार में अशुभ कितना ही क्यों न हो, पर वह शुभ से अधिक नहीं है। गन्दगी और स्वच्छता का अपुनात लगाया जाय तो स्वच्छता ही अधिक मिलेगी। यदि ऐसा न होता तो आत्मा इस संसार में आने और रहने की इच्छा न करती। कठिनाई अपना दृष्टिकोण उलझा लेने भर की है और वह ऐसा नहीं है, जिसे सुधारा-बदला न जा सके।

वाङ्मय खंड-मनस्विता, प्रखरता और तेजस्विता,
पृष्ठ 11.9 से संकलित, संपादित

मान्यताएँ बदलते ही बदल जायेगी आपकी दुनिया

परम पूज्य गुरुदेव द्वारा चलाये जा रहे युग परिवर्तन के आन्दोलन का आधार 'विचार क्रांति अभियान' है। विचारों में सकारात्मकता, सृजनात्मकता का अधिकाधिक समावेश; यही है आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता। गुरुदेव ने एक पुस्तक भी लिखी है-'मनःस्थिति बदले तो परिस्थिति बदले।' जैसे-जैसे व्यक्ति के विचार बदलते जाते हैं, वैसे-वैसे उसकी परिस्थितियाँ भी अनुकूल होती जाती हैं।

अब विज्ञान भी सहमत है

अब विज्ञान की नव विकसित शाखा एपीजेनेटिक्स भी इस तथ्य की पुष्टि कर रही है। एपीजेनेटिक्स के विशेषज्ञ ब्रूस एच. लिप्टन आइंस्टीन के विचारों का समर्थन करते हैं। आइंस्टीन ने कहा था, ''आप स्वयं से पूछिये कि क्या यह दुनिया आपके लिए सहायक है? यदि आपका जवाब 'हाँ' है तो निश्चित रूप से आपकी सहायता करती दिखाई देगी। और यदि आप मानते हैं कि 'नहीं' तो आपको यही दुनिया तरह-तरह के अवरोध खड़ी करती बुरी दिखाई देगी।''

मानव शरीर 5000 खरब कोशिकाओं से बना है। एपीजेनेटिक्स का मानना है कि इन कोशिकाओं में स्थित डीएनए (अनुवांशिक गुणसूत्र) का कोड वातावरण और मनुष्य के दृष्टिकोण-मान्यताओं से प्रभावित होता है। उन्हीं के आधार पर मनुष्य का स्वभाव और व्यवहार भी निर्भर करता है। मान्यता के परिष्कार और वातावरण में सुधार से मनुष्य का स्वभाव और संस्कार भी परिष्कृत होता जाता है। उसी के अनुरूप परिस्थितियाँ सुखद और सहयोगी प्रतीत होती जाती हैं। इसके विपरीत वातावरण में प्रदूषण और विचारों में नकारात्मकता बढ़ने से स्वभाव और संस्कार बिगड़ते हैं तथा परिस्थितियाँ भी प्रतिकूल होती जाती हैं।

मान्यता बदलने से ही मिट गया रोग

ब्रूस एच. लिप्टन ने अपनी बात को कुछ प्रयोगों के माध्यम से भी सत्यापित किया है। उन्होंने घुटने के रोग से पीड़ित एक मरीज को ऑपरेशन कर ठीक कर देने का विश्वास दिलाया। वे उसे ऑपरेशन टेबल पर ले गये। घुटने पर कुछ साधारण-सी क्रियाएँ करते रहे और उस मरीज को स्क्रीन पर किसी अन्य ऑपरेशन का वीडियो

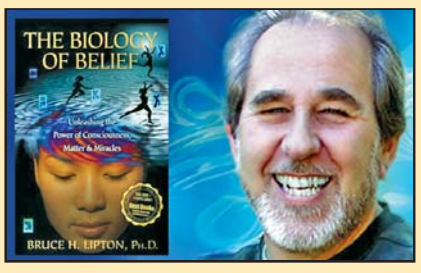

दिखाते रहे। मरीज को विश्वास हो गया कि उसका ऑपरेशन हो गया है।

कुछ दिनों के बाद मरीज के पैर पर किया हल्का-सा घाव ठीक हो गया और आश्चर्य यह कि उसका घुटने का दर्द अब पूरी तरह से ठीक हो गया था, जबकि वास्तव में उस रोग के लिए कुछ किया ही नहीं गया था। लिप्टन का कहना है कि रोग के उपचार के लिए ऑपरेशन ही जरूरी नहीं होता, मरीज की मान्यता बदल देने से भी उसका रोग दूर हो सकता है।

केवल भय से ही हो गयी मृत्यु

इस शोधकार्य से पहले भी ऐसे अनेक प्रयोग हुए हैं, जो मनःस्थिति के परिस्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाते हैं।

मौत की सजा प्राप्त एक व्यक्ति को कहा गया कि अब तुम्हारे गले की एक नस काट दी जायेगी, जिससे तुम्हारा सारा रक्त बह जायेगा और तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी। उसे टेबल पर लिटाया गया, गले पर जरा-सी खरोंच लगा दी गयी। वहीं एक नली से पानी की हल्की धार बहाई गयी जो उस व्यक्ति को गीला करती रही। उसे यह अनुभव नहीं होने दिया गया कि वह रक्त नहीं पानी है। आश्चर्य की बात यह थी कि बिना रक्त बहे उस व्यक्ति की वास्तविक मृत्यु हो गयी।

इन घटनाओं के प्रतिपादन का आशय एक ही है कि अपनी दुनिया बदलनी है तो अपने विचार और मान्यताओं को बदलिये। श्रेष्ठ व्यक्तियों की संगत, सत्साहित्य का स्वाध्याय, दूसरों के प्रति सकारात्मक सोच और सृजनात्मक कार्यों में सक्रियता से हम अपने स्वभाव और संस्कारों को बदलते हुए अपनी दुनिया को निःसंदेह बदल सकते हैं।

संदर्भ के लिए देखें-
https://www.youtube.com/watch?v=ylmwoJDYGjk

इस वर्ष के दो बड़े प्रयोग : संगठन-साधना और युग विचार विस्तार

बढ़-चढ़कर अपनी भूमिका निभाएँ, युगऋषि-युगदेवता के श्रेष्ठतर अनुदान पाएँ

महत्त्वपूर्ण अवसर-श्रेष्ठतर भूमिका

युगऋषि की कृपा से हम सब समझते हैं कि ईश्वरीय योजना के अनुसार नवसृजन का यह अति महत्त्वपूर्ण समय है। युग देवता, ऋषि चेतना की सक्रियता इन दिनों तीव्रतर होती दिख रही है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर उसकी झलक सामान्य लोग भी देख पा रहे हैं। इस क्रम में युगऋषि के शब्दों को ध्यान से पढ़ें-समझें-

विश्व चेतना का उद्घोष दसों दिशाओं में गूँज रहा है। उसी की लालिमा का आभास अंतरिक्ष के हर प्रकोष्ठ में परिलक्षित हो रहा है। न जाने किसका पाञ्चजन्य बज रहा है और एक ही ध्वनि निःसृत कर रहा है-बदलाव! बदलाव!! बदलाव!!! उच्चस्तरीय बदलाव-समग्र बदलाव। यही होगी अगले समय की प्रकृति और नियति। मनुष्यों में से जिनमें भी मनुष्यता जीवित होगी, वे यही सोचेंगे-यही करेंगे।

पाञ्चजन्य बज रहा है, किसका? महाभारत युद्ध के समय भगवान श्रीकृष्ण ने पाञ्चजन्य नामक शंख बजाया था। ईश्वरीय चेतना जब कुछ विशेष करने को तत्पर होती है तो वह पाँचजन्य-प्रकृति को आन्दोलित करती है। उसके स्पंदन पाँचों तत्त्वों, पाँचों तन्मात्राओं, पाँचों ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों, पाँचों प्राणों, पाँचों कोशों को झंकृत करने लगते हैं। पदार्थ और चेतन के संयोग से बनी बाह्य प्रकृति और अन्तःप्रकृति, दोनों में उसके संकल्प के अनुसार हलचलें उभरने लगती हैं।

युगऋषि ने स्पष्ट किया है कि जिनमें मनुष्यता जीवित होगी, वे यही सोचेंगे और यही करेंगे। परमात्मा के विराट संकल्प के अनुरूप छोटे-छोटे संकल्प जाग्रत् आत्माओं में भी उभरते हैं। जहाँ आत्मप्रेरणा के अनुरूप प्रामाणिक दिशा में परिश्रम-पुरुषार्थ किया जाता है, वहाँ विराट प्रकृति भी सहज सहयोग करती है।

हमारे अंदर भी विचार उभरते हैं। तद्नुसार कार्य करने पर दृश्य-अदृश्य माध्यमों से सहयोग भी मिलने लगता है। लेकिन हम यह भी अनुभव करते हैं कि अपने कार्यों की गति और उनका प्रभाव समय की माँग के अनुरूप नहीं है। हमें पहले से कुछ बेहतर करना होगा, अपने व्यक्तित्व को पहले से बेहतर बनाना होगा, तभी बात बनेगी। युगऋषि के आमंत्रण और दिशा-निर्देश को समझकर तद्नुरूप कुछ विशेष करना होगा।

युगऋषि का आमंत्रण-निर्देश

युगऋषि ने बिना किसी भेदभाव के सभी भावनाशीलों, विचारशीलों, कर्मनिष्ठों को ईश्वर के साथ साझेदारी के लिए निमंत्रण दिया है। अगले चरण के बड़े, अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य करने के लिए प्रेरित किया है। देखिए-

युग बदलने के लिए बहुत बड़े काम करने पड़ेंगे; परन्तु यह काम नौकरों से नहीं हो सकेगा। यह काम भावनाशीलों का है, त्यागियों का है। हमको भावनाशील आदमियों की जरूरत है, जिनको हम प्रामाणिक कह सकें, जिनको हम परिश्रमी कह सकें। जो परिश्रमी हैं, वे प्रामाणिक नहीं हैं और वे जो प्रामाणिक हैं, वे परिश्रमी नहीं हैं और वे जो प्रामाणिक और परिश्रमी हैं, उनको मिशन की जानकारी नहीं है। हमारे पास समय बहुत कम है। हमको आदमियों की जरूरत है। अगर आप स्वयं उन आदमियों में शामिल होना चाहते हों, तो आइये आपका स्वागत करते हैं और आपको यह विश्वास दिलाते हैं कि आप जो भी काम करते हैं, उन सब कामों की बजाय यह बेहतरीन धंधा है। इससे बढ़िया धंधा और कोई नहीं हो सकता। हमने किया है, इसलिए आपको भी यकीन दिला सकते हैं कि यह बहुत फायदे का धंधा है।

हमें अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार करने के लिए आपकी सहायता की जरूरत है। हमको उनकी जरूरत है, जो राष्ट्र के निर्माण में काम आ सकें। नये वर्ग में, नये क्षेत्र में जाने के लिए आप सब हमारी मदद कर दीजिए।

नौकर मनोभूमि के लोग काम तो करते हैं, किंतु उसके पीछे भय और लोभ की वृत्तियाँ ही काम करती हैं। भावनाशीलों के कार्य में आत्मीयता, समर्पण और त्याग की प्रवृत्तियाँ सक्रिय होती हैं। इसलिए उन्हें सूक्ष्म सत्ता के अनुदान भी प्राप्त होते हैं। युगऋषि ने स्पष्ट किया है कि यह अनुदान प्रामाणिकता और परिश्रम के अनुसार ही मिलते हैं। परिश्रम मनुष्य अपनी शक्ति के अनुसार ही कर पाता है। अधिक करने के लिए अधिक शक्ति चाहिए, जो **'साधना'** और **'संगठन'** के आधार पर ही विकसित होती है। इसी तरह प्रामाणिकता की दिशा सद्विचारों के स्वाध्याय, मनन-चिंतन से बनती है।

केन्द्र ने यह अनुभव किया है कि यदि क्षेत्र की क्षमता का विकास करना है तो उन्हें युगऋषि के अनुसार अधिक समर्थ और प्रामाणिक बनाना होगा। इसीलिए इस वर्ष दो विशेष प्रयोगों पर बल दिया जा रहा है।

1. संगठन साधना और 2. युग साहित्य-युग विचार का विस्तार। इन दोनों प्रयोगों से सृजन सैनिकों-युगशिल्पियों की संख्या और गुणवत्ता दोनों का विकास होगा। नवयुग सृजन की ईश्वरीय योजना को अधिक गतिशील बनाने का श्रेय-सौभाग्य हमें प्राप्त हो सकेगा।

संगठन-साधना

युगऋषि ने कहा है कि जब किसी अच्छे कार्य का शुभारंभ करना हो और पुकारने, आग्रह करने पर भी कोई व्यक्ति साथ देने के लिए नहीं आता तो ऐसे समय में *'एकला चलो'* का सूत्र ही उचित है। किंतु जब कार्य का विस्तार होने लगे, सत्कार्य में भागीदारी के लिए जन उत्साह उभरने लगे तो *'मिलके चलो-संगठित होकर कार्य करो'* सिद्धांत का अभ्यास करना आवश्यक हो जाता है। प्रचारात्मक कार्य तो अकेले-अकेले भी किये जा सकते हैं, किंतु सृजनात्मक आन्दोलन के लिए तो संगठित होकर ही प्रयास करने होते हैं।

युगऋषि का अभियान अब व्यापक होता जा रहा है। हमें उनके सहयोगी के नाते मिल-जुलकर सहयोगपूर्वक कार्य को गति देनी होगी। एक बात यह भी है कि हमारा संगठन संस्थाओं की तरह नियमों से बँधकर नहीं, परिवार की तरह आत्मीयता के, स्नेह के बंधनों से बँधकर बना है। इस प्रकार का संगठन बनाने के लिए अपने व्यक्तिगत अहं को गलाना और समूहगत विश्वास को बढ़ाना, आत्मीयता के प्रभाव से दोषों को सुधारना और गुणों को उभारना जरूरी होता है। अहं को गलाना, आत्मीयता को बढ़ाना और कौशल को निखारना, यह सभी साधना के विषय हैं। इसलिए हमारे लिए इन दिनों *'संगठन-साधना'* बहुत जरूरी हो गयी है। इसी आवश्यकता को पूरा करने के लिए केन्द्र में 'संगठन-साधना' सत्रों की शृंखला प्रारंभ की गयी है।

संगठन साधना, जीवन साधना के सूत्र युगऋषि बहुत आगे तक के लिए हमारे लिए बनाकर रख गये हैं। केवल चर्चा या समीक्षा करने भर से काम नहीं चल सकता। आत्म-समीक्षा के साथ, आत्मशोधन, निर्माण तथा विकास के लिए साधनात्मक प्रयोग करने-कराने होंगे। जैसे-जैसे हमारी संगठन साधना निखरेगी, वैसे-वैसे हमारा संगठन और कार्यकौशल भी विकसित होगा। देवशक्तियों के संगठन-सहगमन से उभरी 'दुर्गा' की तरह देववृत्तियों के संगठन-सहगमन से 'युगशक्ति' का स्वरूप उभरेगा। ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल इसी युगदुर्गा की प्रतीक है।

अभी यह 'संगठन-साधना' के सत्र केन्द्र में ही चलाये जा रहे हैं। अगले चरण में उन्हें क्षेत्रों में भी चलाया जायगा। संगठित शक्ति-युगशक्ति का स्वरूप इतना समर्थ बनाना है कि युग की 100% जनता तक उसका संदेश पहुँचे तथा जो सहमत-प्रभावित हों, उन सभी को नवसृजन अभियान में भागीदार बनाना संभव हो सके। उनकी प्रतिभा को परिष्कृत करते हुए उन्हें समझदारी, ईमानदारी के रास्ते जिम्मेदारी और बहादुरी के स्तर तक विकसित किया जा सके। यह सब करने पर ही हम युगऋषि के विश्वस्त, जिम्मेदार सहयोगी, सपूत, अंग-अवयव सिद्ध हो सकेंगे। ऐसा हम कर सकते हैं और हमें करना ही है।

युगसाहित्य विस्तार

'युग निर्माण योजना' वास्तव में एक महाक्रांति की योजना है। विचार क्रांति, नैतिक क्रांति और सामाजिक क्रांति इस त्रिपदा महाक्रांति के तीन चरण हैं। विचार क्रांति के माध्यम से जन-जन तक उसका संदेश पहुँचाया जाना है। उनके मन-मानस को सत्प्रयोजन के लिए तैयार किया जाना है। इस प्रकार शोधित, जाग्रत् हृदय और मस्तिष्कों से प्रेरित आदर्शनिष्ठ सदाचरण उभरते हैं तो 'नैतिक क्रांति' उभरती है। दुष्प्रवृत्तियों को दूर करने तथा सत्प्रवृत्तियों को दृढ़तापूर्वक अपनाने की उमंगें जब जन-जन में उभरने लगती हैं, तब प्रभावशाली और टिकाऊ परिणाम देने वाली सामाजिक क्रांति उभरती है। ऐसी ही एक महाक्रांति ईश्वरीय प्रेरणा और नैष्ठिकों के पुरुषार्थ के सुसंयोग से उभरने के लिए ललक रही है। हम सभी को उसके प्रामाणिक संवाहक-विस्तारक बनना है।

ऐसी क्रान्तियाँ कैसे उपजती और बढ़ती हैं, इस संदर्भ में युगऋषि के उद्गार पढ़ें और समझें। वे लिखते हैं-

क्रान्ति के बीज किसी महान् विचारक के दिमाग में जमते हैं। वहाँ से फूल-फल कर क्रान्तिधर्मी-साहित्य के रूप में बाहर आते हैं और संक्रामक रोग की तरह अन्य दिमागों में उपजकर बढ़ते हैं। सिलसिला जारी रहता है। क्रान्ति की उमंगों की बाढ़ आती है। सब ओर क्रान्ति का पर्व मनने लगता है। चिनगारी से आग और आग से दावानल बन जाता है। बुरे-भले सब तरह के लोग उसके प्रभाव में आते हैं।

ऐसे में नियति का नियंत्रण करने वाली अदृश्य सत्ता परिवर्तन के क्रान्तिकारी आवेग से भरी प्रतीत होती है। तोपों की गरज, फौजों के कदमों के धमाके, बड़े-बड़े सत्ताधीशों के अधःपतन और समूचे विश्व में व्यापक उथल-पुथल के शोरगुल से भरे ये क्रान्ति के समारोह हर ओर तीव्र विनाश और सशक्त सृजन की बाढ़ ला देते हैं। क्रान्ति के इस पर्व में दुनिया को गलाने वाली कढ़ाई में डाल दिया जाता है और वह नया रूप, नया आकार लेकर निकल आती है। महाक्रान्ति के इस पर्व में ऐसा बहुत कुछ घटित होता है, जिसे देखकर बुद्धिमानों की बुद्धिमत्ता चकरा जाती है और प्राज्ञों की प्रज्ञा हास्यास्पद बन जाती है।

युगऋषि ने स्पष्ट रूप से यह बात समझायी है कि इस क्रांति में तोपों, तलवारों का उपयोग नहीं होगा, सिर नहीं काटे जायेंगे। लेकिन प्रचण्ड विचारों की तलवार से लोगों के दिमाग जरूर बदले जायेंगे। कल्कि अवतार के प्रतीकात्मक चित्रण में उनके हाथ में ऐसी ही तलवार दिखाई जाती है। युगऋषि ने युग परिवर्तनकारी अपने विचारों की शक्ति को ऐसी ही तलवार भवानी कहते हुए लिखा है-

हमने एक बहुत ही शानदार भवानी तलवार निकाली है। ऐसी शानदार योजना दुनिया में आज तक नहीं बनी। क्या बनी है? हमने हर पढ़े-लिखे को नियमित रूप से बिना मूल्य युग-साहित्य पढ़ाने की योजना बनायी है। आप पढ़े-लिखे लोगों तक हमारी आवाज पहुँचा दीजिए। हमारी जलन को, हमारी विचारणा की चिनगारियों को पहुँचा दीजिए।

लोगों से आप यह मत कहना कि गुरुजी बड़े सिद्ध-पुरुष हैं, बड़े महात्मा हैं और सबको वरदान देते हैं, वरन् यह कहना कि गुरुजी एक ऐसे व्यक्ति का नाम है, जिनके पेट से आग निकलती है, जिनकी आँखों में से शोले निकलते हैं। आप ऐसे गुरुजी का परिचय कराना, सिद्ध-पुरुष का नहीं।

वे निरंतर कहते रहें हैं कि उन्होंने अपने पास आने वालों की मनोकामनाएँ भी पूरी की हैं, यह उनका स्वभाव रहा है, उद्देश्य नहीं। उनका उद्देश्य तो महाक्रांति को आगे बढ़ाने के लिए जी-जान झोंक देने वाले क्रांतिकारी तैयार करने का रहा है। इसीलिए उन्होंने अपना परिचय सिद्ध पुरुष के रूप में न देकर क्रांतिदर्शी ऋषि, युगपुरुष के रूप में देने की बात कही है।

उन्होंने जो चाहा, वही करें

युगऋषि ने कहा है कि क्रांति की ऊर्जा पैदा करने का महान कार्य उनने कर दिया है। हम उनके विचारों की आग को विविध तरीकों से जन-जन तक पहुँचाने के लिए उनका सहयोग करें। पढ़िए उन्हीं के शब्दों में -

हमारे विचारों को आप पढ़िये और हमारी आग की चिनगारी को, जो प्रज्ञा-अभियान के अन्तर्गत युग-साहित्य के रूप में लिखना शुरू किया है, उसे लोगों में फैला दीजिए। जीवन की वास्तविकता के सिद्धान्त को समझिए, ख्वाबी दुनिया में से निकलिए और आदान-प्रदान की दुनिया में आइये।

आपके नजदीक जितने आदमी हैं, उनमें आप हमारे विचार फैला दीजिए। हमको आगे बढ़ने दीजिए, सम्पर्क बनाने दीजिए और आप हमारी सहायता कर दीजिए; ताकि हम उन विचारशीलों के पास, शिक्षितों के पास जाने में समर्थ हो सकें। इससे कम में हमारा काम चलने वाला नहीं है और न ही हमें संतोष होगा।

हमारे विचार बड़े पैने हैं, तीखे हैं। हमारी सारी शक्ति हमारे विचारों में समाहित है। दुनिया को हम पलट देने का जो दावा करते हैं, वह सिद्धियों से नहीं, अपने सशक्त विचारों से करते हैं। आप इन विचारों को फैलाने में हमारी सहायता कीजिए।

युग विचार विस्तार के लिए युग साहित्य बहुत उपयोगी है। उसे फैलाने के लिए हमें कुछ और विशेष करना है। केवल साहित्य विक्रेता की तरह साहित्य विक्रय से बात नहीं बनेगी। साहित्य का अध्ययन करने-कराने के क्रम अपनाकर-युग विचारों को जनजीवन में उतारना भी होगा। हमें कुछ नया करने की समयबद्ध योजना बनाकर कार्य करना होगा। (क्रमशः)

भाग्य के सम्बन्ध में एक बात निश्चित है कि कोई उसे बदलना चाहे, तो बदल सकता है। भवितव्यता अटल नहीं है।

शक्तिपीठ ने आरंभ किया नेत्रदान अभियान

शक्तिपीठ पर ही बनेगा आई कलेक्शन सेंटर, कार्यकर्त्ताओं का होगा प्रशिक्षण

जोबट, अलीराजपुर (म.प्र.)

9 नवम्बर को गायत्री शक्तिपीठ जोबट पर एक दिवसीय नेत्रदान प्रशिक्षण शिविर के साथ नेत्रदान अभियान का शुभारंभ हुआ। इंदौर के एम.के. इंटरनेशनल आई बैंक की संचालक डॉ. उमा झंवर ने शिविर को संबोधित करते हुए बताया कि आधुनिक तकनीक के आधार पर नेत्रदान करने वाले व्यक्ति के मरने के बाद 6 घंटे के भीतर ही उसकी पूरी आँख नहीं, केवल कॉर्निया ही निकाला जाता है। एक व्यक्ति का नेत्रदान 6 व्यक्तियों की आँखों को नयी रोशनी दे सकता है। उन्होंने शिविरार्थियों को पूरी प्रक्रिया पावर पॉइंट प्रेज़ेण्टेशन के आधार पर समझाई।

यह शिविर जिला कलेक्टर श्री शेखर वर्मा की मुख्य उपस्थिति में आयोजित हुआ। उन्होंने नेत्रदान को महादान बताते हुए कहा कि नेत्रदान करने वाला व्यक्ति किसी के जीवन को रोशन कर उसे परमात्मा की बनायी दुनिया के दर्शन कराने का अखण्ड सौभाग्य प्रदान करता है।

> ◆ एक व्यक्ति के नेत्रदान से छः लोगों को मिल सकती है आँखों की ज्योति - **डॉ. उमा झंवर**

इस शिविर के बाद कलेक्टर महोदय के मार्गदर्शन में शक्तिपीठ पर आई कलेक्शन सेंटर आरंभ करने की प्रक्रिया शुरू हो गयी। इसके लिए जोबट शक्तिपीठ के कार्यकर्त्ता इंदौर आई बैंक से 6 सप्ताह का प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। हिंदू धर्मादा ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल ने जोबट से नेत्र एकत्रित कर इंदौर भेजने की जिम्मेदारी ली। आई बैंक इसके लिए किट्स तथा सारे औजारों की व्यवस्था करेगा। प्रशिक्षण के समय ही वहाँ उपस्थित 50 लोगों ने नेत्रदान का संकल्प पत्र भरकर अभियान का शानदार शुभारंभ किया। शक्तिपीठ पर आने वाले लोगों और अन्य शहर-गाँवों में नेत्रदान के लिए जागरूकता बढ़ाकर इस अभियान को गति देने का आश्वासन कार्यक्रम संचालक डॉ. शिवनारायण सक्सेना ने दिया। डॉ. शिवनारायण सक्सेना के अलावा जोबट के श्री जयप्रकाश शर्मा, अलीराजपुर के श्री विनोद जायसवाल तथा श्याम त्रिवेदी ने इस कार्य की महती जिम्मेदारी ली है।

गायत्री शक्तिपीठ जोबट इससे पूर्व कुष्ठ रोग और क्षय रोग अभियान पूरे समर्पण और सफलता के साथ चला चुका है। इस सफलता के कर्णधार श्री माधोसिंह डाबर, उषा उपाध्याय, सी.एम. पाठक और भूरसिंह चौहान का अतिथियों ने इस शिविर के समय पुष्पमालाओं के साथ स्वागत किया। इन महानुभावों का यह समर्पण भाव ही भावी योजना का आधार है।

गुजरात की प्रत्येक नगरपालिका बनाये पं.श्रीराम शर्मा आचार्य स्वास्थ्य उद्यान

गुजरात की मुख्यमंत्री ने दिये निर्देश

गायत्री परिवार द्वारा मोडासा में की गयी स्थापना से हुई प्रभावित

मोडासा, अरवल्ली (गुजरात)

आज के युग में स्वास्थ्य की चिंता किसे नहीं है? स्वास्थ्य के प्रति इसी जागरूकता का परिणाम है कि जब से मोडासा नगर पालिका ने ओधारी तालाब के किनारे गायत्री परिवार के सौजन्य से एक्यूप्रेशर पथ और स्वास्थ्य पार्क बनाया है, इसका आकर्षण ही अचानक कई गुना बढ़ गया है। अब वहाँ सैकड़ों लोग प्रतिदिन सुबह-शाम नियमित रूप से आते और स्वास्थ्य लाभ लेते देखे जा सकते हैं। ब्लड प्रेशर, डायबिटीज़, पेट के रोग, शरीर के विभिन्न भागों के दर्द में लोगों को इस एक्यूप्रेशर पथ से आश्चर्यजनक लाभ मिल रहे हैं, क्रमशः इसकी लोकप्रियता बढ़ती ही जा रही है।

उद्यान का मुख्य आकर्षण-एक्यूप्रेशर पथ

मोडासा के पं. श्रीराम शर्मा आचार्य स्वास्थ्य उद्यान की लोकप्रियता और लाभों की चर्चा मुख्यमंत्री आनंदीबेन तक पहुँची। वे भी प्रभावित हुईं और नगरपालिकाएँ इस स्वास्थ्य पार्क का अध्ययन कर अपने नगर में भी ऐसे स्वास्थ्य पार्क-एक्यूप्रेशर पथों का निर्माण करायें, ऐसी अनुशंसा का पत्र (चित्र सहित) प्रत्येक नगरपालिका अध्यक्ष एवं जिलाधिकारी को मुख्यमंत्री के उपसचिव श्री हेमांग पुरोहित की ओर से भेजा गया है। आवश्यकतानुसार परिजन इन पत्रों की प्रतिलिपि गायत्री परिवार, गुजरात के स्वास्थ्य आन्दोलन प्रभारी श्री किरीटभाई सोनी, मोडासा से प्राप्त कर सकते हैं।

मोडासा में निर्मित पं. श्रीराम शर्मा आचार्य स्वास्थ्य उद्यान गुजरात का प्रथम स्वास्थ्य उद्यान है। इसमें 600 मीटर लम्बाई का 6 फीट चौड़ा एक्यूप्रेशर पथ बनाया गया है। दो-दो फीट चौड़े तीव्र, मध्यम और कम एक्यूप्रेशर की तीव्रता वाले पथ बनाये गये हैं, जिनका उपयोग लाभार्थी अपनी क्षमता के अनुसार करते हैं। स्वास्थ्य पार्क में राशि वाटिका, औषधियुक्त पौधे, सद्वाक्य और एलईडी से प्रकाशित विचार क्रांति की लाल मशाल की प्रतिमा भी लोगों को शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करती है।

नारी जागृति अभियान ने की स्वच्छता की पहल

राष्ट्रीय राजधानी में गायत्री परिवार के महिला संगठन 'नारी जागृति अभियान' ने 30 नवम्बर से स्वच्छता अभियान का शुभारंभ किया। क्षेत्रीय पार्षद प्रीति ने दिलशाद गार्डन के पॉकेट 'बी' से इसका शुभारंभ करते हुए नगर में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए ऐसे कार्यक्रम नियमित रूप से किये जाने की आवश्यकता बतायी। स्वच्छता अभियान में रेसिडेंशियल वेलफेअर एसोसिएशन के सदस्यों ने भी भाग लिया। अभियान की संयोजक श्रीमती कांता जड़िया ने अन्य ब्लॉकों में भी इसी प्रकार लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने की भावी योजनाओं की जानकारी दी।

श्रीराम स्मृति उपवन की स्थापना हुई

जबलपुर (मध्य प्रदेश) : गायत्री शक्तिपीठ मनमोहन नगर ने शक्तिपीठ के पीछे के पार्क में एक्यूप्रेशर पथ सहित पं. श्रीराम शर्मा आयार्च स्मृति उपवन का निर्माण कराया है। मध्य प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री श्री शरद जैन ने 22 अक्टूबर को इसका उद्घाटन किया। उन्होंने इसके विकास के लिए पाँच लाख रुपये का अनुदान देने की घोषणा भी की।

रक्तदान शिविर

कोटा (राजस्थान)

गायत्री शक्तिपीठ कोटा पर गायत्री परिवार, गुजराती समाज और पाटीदार सेवा संस्थान के तत्त्वावधान में 16 नवम्बर को रक्तदान शिविर आयोजित किया। कृष्णा ब्लड बैंक सोसायटी के सहयोग से आयोजित इस शिविर में 60 लोगों ने रक्तदान कर शिविर को शानदार सफलता प्रदान की। मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री जी.डी. पटेल ने रक्तदान को पीड़ित मानवता की सेवा का एक महान अभियान बताते हुए उपस्थित लोगों को अधिकाधिक रक्तदान करने की प्रेरणा दी। गायत्री परिवार और पाटीदार सेवा संस्थान ने वर्ष में दो बार रक्तदान शिविर आयोजित करने का निर्णय लिया।

बच्चे बने बागबाँ

10 लाख पेड़ों को कटने से बचा रहे हैं स्कूली बच्चे

भिलाई (छत्तीसगढ़)

डूंडेरा गाँव के स्कूली बच्चों ने अब बागबां बनकर अपने पास से गुजरने वाली नहर के आसपास लगे सागौन और अन्य प्रजाति के वृक्षों को न कटने देने की कसम खायी है। 'हितवा' नामक संस्था से प्रेरणा लेकर पर्यावरण संरक्षण अभियान में जुटे ये बच्चे जब भी किसी को पेड़ों को काटता देखते हैं तो उनकी कुल्हाड़ी ही छीन लेते हैं। आवश्यकता पड़ने पर स्थानीय पुलिस की भी मदद ली जाती है। बच्चों की सक्रियता और सहयोग का ही परिणाम है कि पेड़ तो कटने से बच रहे ही हैं, पुराने कटे पेड़ों के ठूँठ भी हरेभरे हो रहे हैं।

सन् 94 में इस नहर के किनारे 18 करोड़ रुपये की लागत से 10 लाख पेड़ लगाये गये थे। डूडेरा, जारातराई, डूमरडीह, नेवई, मरोदा बाँध के पास नीम, करंज, बबूल, आम, जामुन, आँवला जैसे फलदार वृक्ष भी लगाये गये हैं। आज इन वृक्षों पर मुनाफाखोरों की नजर है। पहले वे मौका देखकर इन पेड़ों को काट लिया करते थे, लेकिन जब से हितवा की प्रेरणा से यह बाल सेना सक्रिय हुई है, पेड़ों का कटना रुक गया है। जैसे ही कोई पेड़ों को कटते देखता है, तत्काल वह अपने संगठन को फोन कर देते हैं। अच्छे नेटवर्क और त्वरित सक्रियता के कारण देखते ही देखते वहाँ बाल सेना पहुँच जाती है और पेड़ न काटने के लिए उन्हें विवश कर देती है।

जन्मदिन पर बच्चे लगाते हैं पेड़

बच्चों की टोली ने अपने जन्मदिन या अन्य महत्त्वपूर्ण दिवसों पर खाली पड़े स्थानों पर पौधारोपण करने का अभियान भी चला रखा है। इस तरह वे खाली पड़ी जमीन को अतिक्रमण से बचाने के अभियान में जुट गये हैं।

विवाह की मंगलवेला में दिखाई दिये सत्प्रवृत्ति संवर्धन के निराले अंदाज

उपहार नहीं, 370 यूनिट रक्तदान

निमंत्रण पत्रिका में ही दिये गये थे निर्देश

वडोदरा, गुजरात में एक डॉक्टर परिवार की बेटी का विवाह हुआ, जिसमें नवयुगल को बधाई देने आये लोगों ने 370 यूनिट रक्तदान किया। दुल्हन का कहना था कि रक्तदान किसी जो जीवनदान देने के समान है। विवाह के पावन अवसर पर यदि ऐसा पुण्यदायी कार्य होता है तो उन्हें सबसे ज्यादा खुशी होगी। उन्होंने अपनी निमंत्रण पत्रिका में ही लिख दिया था कि उन्हें आशीर्वाद देने आने वाले परिजन कोई उपहार न लायें, लेकिन रक्तदान अवश्य करें। स्वयं वर-वधू ने भी इस अवसर पर रक्तदान किया।

शगुन और मुँह दिखाई में दी रोड वैक्यूम मशीन

ननिहाल पक्ष ने नगर को दिये 101 डस्टबिन

फैशन डिजाइनर युगल ने लिए एक माह तक नगर सफाई का संकल्प

भिवानी, हरियाणा में फैशन डिजाइनर दम्पति सन्नी और पानू ने अपने विवाह से स्वच्छता का अनोखा संदेश दिया। वधू द्वारा शगुन में 22 लाख रुपये कीमत की रोड वैक्यूम मशीन (सड़क सफाई मशीन) लेकर आने और वर पक्ष द्वारा भी नयी नवेली वधू की मुँह दिखाई की रस्म में एक और रोड वैक्यूम मशीन देने के समाचार विवाह से पूर्व 'अमर उजाला' में प्रकाशित हुए थे। इसके अनुसार भात (दूल्हे के ननिहाल पक्ष द्वारा किये जाने वाले सम्मान की रस्म) में शहर को 101 डस्टबिन दिये गये। इसके अलावा लावारिस पशुओं और पक्षियों के लिए चूरी व बाजरे की बोरियाँ लेकर आये। दोनों ने अपने विवाह के बाद प्राप्त मशीनों से एक माह तक नगर की सफाई करते हुए नगरवासियों को स्वच्छता का संदेश देने का निर्णय लिया था।

एक रुपये में लगन, 15 लाख का दान

24 गौशालाओं और 2 धर्मशालाओं को दिया दान

महेन्द्रगढ़, हरियाणा में कर्मवीर और कविता ने अपनी सगाई से एक आदर्श प्रस्तुत किया। उन्होंने मात्र एक चाँदी का रुपया और एक नारियल लेकर बड़ी सादगी के साथ अपनी सगाई की। इस अवसर पर दोनों परिवारों की ओर से 24 गोशालाओं और दो धर्मशालाओं को 15 लाख रुपये का दान दिया गया।

कर्मवीर, एम.ए. और कविता, पीएच.डी दोनों ही प्रतिष्ठित परिवार से हैं। उनकी सगाई में सांसद और मंत्री के भाई के अलावा हजारों गणमान्य शामिल हुए। वे समाज को संदेश देना चाहते हैं कि दहेज लेना और देना पाप है और इसके खिलाफ लड़ाई लड़े जाने की आवश्यकता है। वे समाज में फैली बुराइयों के खिलाफ संघर्ष की शुरुआत अपनी शादी से ही करना चाहते हैं।

जीवन का एक-एक क्षण मूल्यवान है। मनुष्य को चाहिए कि वह पुरुषार्थ के बल पर इसकी पूरी कीमत लेने का प्रयत्न करें।

भव्य गायत्री शक्तिपीठ

गायत्री माता का पूजन

प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा की प्राण प्रतिष्ठा

महाकाल की प्राण प्रतिष्ठा

नवनिर्मित भव्य यज्ञशाला

डीसा के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में घनीभूत हुई गायत्री चेतना

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने नैष्ठिक साधक स्व. श्री हरीश भाई जोशी को बार-बार याद करते हुए दी श्रद्धांजलि

6 दिसम्बर को गुजरात के बनासकांठा जिले की डीसा नगरी में गायत्री शक्तिपीठ परिसर में एक विशाल प्राण प्रतिष्ठा समारोह आयोजित हुआ। बनासकांठा और आसपास के जिले ही नहीं पूरे प्रांत के कार्यकर्त्ता इस समारोह में उपस्थित हुए। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की उपस्थिति से गायत्री चेतना का अत्यंत घनीभूत स्वरूप इस समारोह में दिखाई दिया। उनके द्वारा बताये गायत्री और यज्ञ के दर्शन एवं स्वरूप ने उपस्थित हर श्रोता के मन में अपनी साधना की गहराई बढ़ाने तथा महाकाल का सहयोगी बनने की उत्कट अभिलाषा जगायी। शांतिकुंज से पहुँची श्री उदयकिशोर मिश्रा एवं श्री किरण पटेल ने प्राण प्रतिष्ठा का कर्मकाण्ड सम्पन्न कराया। श्री ओंकार पाटीदार एवं नारायण रघुवंशी ने अपने ओजस्वी प्रज्ञागीतों से श्रोताओं की श्रद्धा, संवेदना और संकल्पों को बुलंद किया।

नयी स्थापनाओं में युग चेतना की प्राण प्रतिष्ठा

डीसा पहुँचने पर आदरणीय डॉ. साहब ने सबसे पहले गायत्री माता का दर्शन और पूजन किया। उसके बाद उनके द्वारा उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव-वंदनीया माताजी की सूक्ष्म चेतना के प्रतीक प्रखर प्रज्ञा, सजल श्रद्धा की प्राण प्रतिष्ठा की। उसके बाद शिव परिवार की प्राण प्रतिष्ठा की गयी।

गायत्री शक्तिपीठ डीसा पर 'विचारक्रांति पुंज' के नाम से नये साहित्य स्टॉल का उद्घाटन, जिला साहित्य रथ का उद्घाटन आद. डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने किया। उन्होंने शक्तिपीठ के सामने नगर प्रवेश द्वार का उद्घाटन भी किया।

गायत्री उपासना से मिलती है असली ताकत

भगवान शिव की तरह परम पूज्य गुरुदेव ने ज्ञानगंगा-गायत्री को जन-जन तक पहुँचाकर विश्वमानवता को नवजीवन दिया है।

व्यक्ति की असली ताकत आध्यात्मिक ताकत होती है, जो गायत्री उपासना से आती है। गायत्री उपासक की शक्ल तो वही रहती है, लेकिन उसका जीवन बदलता जाता है। उसका जीवन ऊर्जावान हो जाता है, स्नेह से भर जाता है।

गायत्री की सिद्धि के लिए उपासक को सदैव नियमितता, संयम, समर्पण भाव का अभ्यास करना चाहिए। पवित्रता, प्रखरता, ज्ञानवृद्धि और बुराइयों (झूठ, कड़वाहट, निंदा, मांसाहार, नशा आदि) से वैराग्य में उत्तरोत्तर प्रगति साधना की सफलता के परिचायक हैं। साधक को हर पल सजगता से इनका अभ्यास करना चाहिए।

यज्ञ का तात्पर्य है अपने भीतर परहित के लिए जीने की आग जलाना।

स्व. श्री हरीशभाई को श्रद्धांजलि

सद्गुरु का मिलना जीवन का एक दुर्लभ सौभाग्य है। लाखों में से एक को सद्गुरु की प्राप्ति होती है। फिर महाकाल स्वरूप परम पूज्य गुरुदेव जैसे सद्गुरु के अवसर तो यदाकदा ही आते हैं।

मेरे भाई के समान स्व. श्री हरीशभाई जोशी का जीवन हीरे जैसा था। वे मेरे जीवन के पहले प्रवास में पल-पल साथ रहे। 25 दिसम्बर 1990 से 28 जनवरी के पूरे गुजरात प्रवास में वे मेरे साथ रहे, हम गुजरात के गाँव-गाँव गये। कार्यकर्त्ताओं से बात करना, सभाओं को संबोधित करना उन्होंने सिखाया, साथ ही हर पल मेरे सुख-दुख का पूरा ध्यान रखा।

डीसा के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में मैं आऊँ यह उनकी इच्छा थी। स्व. हरीश भाई की धर्मपत्नी वर्षाबेन ने जब इसके लिए मुझसे आग्रह किया तो मैं मना नहीं कर सका। मैं तमाम व्यस्तताओं के बीच अपने भाई, परम मित्र हरीशभाई की गुरुभक्ति को नमन करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने आया हूँ। डीसा के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में पहुँचे आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने बार-बार स्व. श्री हरीश भाई का स्मरण किया।

उपस्थित रहीं विशिष्ट विभूतियाँ

डीसा के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में अनेक विभूतियों ने भाग लिया। विधायक श्री गोवाभाई रबारी, श्री दिगंतभाई ब्रह्मभट्ट-उप जिलाधिकारी डीसा, श्रीमती कैलाशबेन विपुलभाई शाह-नगरपालिका अध्यक्ष, श्री गिरीशभाई पटेल-नगरपालिका उपाध्यक्ष, श्री मावजीभाई देसाई-एपीएसडी डीसा के अध्यक्ष, श्री राजूभाई त्रिवेदी, श्री दिनेशभाई चौधरी आदि अनेक गणमान्य इस समारोह में उपस्थित थे।

गुरुदेव का संकेत साकार हुआ

परम पूज्य गुरुदेव अपने डीसा प्रवास के समय श्री वसंतभाई पटेल के घर ठहरे थे। गुरुदेव ने उनके घर गायत्री माता की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की थी। वसंतभाई के आग्रह पर गुरुदेव ने उन्हें अपनी चरण पादुकाएँ भी दी थीं, लेकिन उनकी स्थापना करने के लिए मना किया था। परम पूज्य गुरुदेव ने कुछ समय बताते हुए कहा था कि तब तक इन्हें अपने पास रखना।

श्री वसंत भाई ने बताया कि काल गणना के अनुसार वह समय यही था। आदरणीय डॉ. साहब ने उन चरण पादुकाओं को नमन किया, उनका पूजन किया और फिर पूजा स्थली पर उनकी स्थापना करायी।

आदरणीय डॉ. साहब ने डीसा प्रवास में श्री वसंत भाई पटेल के शिष्यत्व को भी अंतःकरण से याद किया। उल्लेखनीय है कि श्री वसंत भाई भी स्व. श्री हरीश भाई के साथ मिलकर एक और एक ग्यारह बनकर युगचेतना के विस्तार के लिए कार्य करते रहे।

आदर्शों को जीने का नाम है अध्यात्म

नगर के गणमान्यों की कार्यशाला में शांतिकुंज प्रतिनिधि का संदेश

डीसा के विशिष्ट गणमान्यों के लिए गायत्री शक्तिपीठ ने आदरणीय डॉ. साहब की एक विशेष कार्यशाला आयोजित की थी, विषय था 'कार्यस्थल पर वैज्ञानिक अध्यात्मवाद'। यह कार्यशाला एस.सी.डब्ल्यू हाईस्कूल के हॉल में सम्पन्न हुई, जिसमें लगभग 250 गणमान्य उपस्थित रहे।

डॉ. साहब ने कहा कि धर्म-अध्यात्म से जुड़ी अनेक विडम्बनाओं ने ही इस युग में अनास्था का घोर संकट खड़ा कर तमाम समस्याओं को जन्म दिया है। आमतौर पर पूजा-पाठ, व्रत-उपवास जैसे कर्मकाण्ड को अध्यात्म मान लिया जाता है और आज के प्रतिस्पर्धी जीवन में समय न होने की बात कहते हुए लोग अध्यात्म की उपेक्षा करते हैं या छिटपुट कर्मकाण्ड कर इतिश्री मान लेते और अध्यात्म के वास्तविक लाभों से वंचित रहते देखे जाते हैं।

वस्तुतः आदर्शों को जीवन में उतारने का नाम है अध्यात्म। इसी से उसे वास्तविक ताकत मिलती है। किसी भी स्थान पर, किसी भी कार्य में आध्यात्मिकता का समावेश कर उस कार्य को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। दूसरों के हित की कामना, संयम, नियमितता, अपरिग्रह, सत्य जैसे गुणों का अभ्यास वास्तविक अध्यात्म है। इनके अभ्यास से जो शक्ति मिलती है, सच्ची शांति और संतोष मिलता है, उसके सामने धन-दौलत, सुविधा-साधन इकट्ठा करने में ही जीवन गँवा देने का आकर्षण धूमिल होता जाता है। तब व्यक्ति में कुछ कर गुजरते हुए दूसरों की पीड़ा दूर करने के लिए जो संवेदना उभरती है वह उसे महानता के पथ पर अग्रसर करती है। अध्यात्म पूरी तरह वैज्ञानिक है, जिसे परम पूज्य गुरुदेव ने अपने जीवन से सिद्ध कर दिखाया है।

'नववर्ष 2015 युग साहित्य विस्तार वर्ष' है। श्रद्धेय डॉ0प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी के नेतृत्व में पिछले 20 वर्षों से विदेशों में मिशन का विस्तार कई गुना हुआ। 108 कुण्डीय-51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ, अश्वमेध महायज्ञ, बाजपेय यज्ञ से लेकर शांतिकुञ्ज प्रतिनिधियों एवं स्थानीय परिजनों द्वारा हजारों की संख्या में छोटे-बड़े आयोजन सम्पन्न हुए। न्यूजर्सी, शिकागो, लॉस ऐंजल्स, ह्यूस्टन, लीस्टर (इंग्लैड), साउथ अफ्रीका, फीजी, मॉरीशस जैसे देशों में गायत्री शक्तिपीठ-गायत्री चेतना केंद्र खुल गये। एक हजार से अधिक शाखाओं के माध्यम से हजारों परिजन विभिन्न रूपों में मिशन की गतिविधियों का संचालन कर रहे हैं।

विदेश प्रवास पर जाने वाले परिजनों के लिए प्रशिक्षण सत्र

(केवल उन्हीं के लिए, जिनके परिजन पहले से विदेशों में बसे हैं।)

विदेश के अनेक आयोजनों में बड़ी संख्या में ऐसे परिजन सम्मिलित हुए जिनके संबंधी, बेटे, बहू, भाई, बहन एवं निकट के रिश्तेदार उन देशों में हैं एवं ऐसे परिजन उन देशों की यात्रा भी करते हैं, छः माह से लेकर एक वर्ष का समय भी व्यतीत करते हैं। ऐसे परिजन रिश्तेदारों के पास कुछ समय बिताने के बाद गायत्री परिवार से जुड़े होने के कारण मिशन की गतिविधियों में समय भी देना चाहते हैं, किन्तु प्रशिक्षण की कमी से उनका उपयोग हो नहीं पाता।

ऐसे परिजनों के आग्रह पर युगतीर्थ शांतिकुञ्ज में नौ दिवसीय प्रशिक्षण सत्र चलाने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है जिसमें, साधना, साहित्य विस्तार, यज्ञ, दीपयज्ञ, सोलह संस्कार, भाषण-संभाषण के साथ मिशन के अनुशासन का प्रशिक्षण दिया जायेगा। इस प्रशिक्षण के बाद प्रशिक्षित परिजन गायत्री चेतना केंद्रों, गायत्री शक्तिपीठों एवं स्थानीय शाखाओं में समय दे सकते हैं। जो भी परिजन इस प्रशिक्षण सत्र में भाग लेना चाहते हैं वे नीचे लिखे पते, फोन नं. एवं ईमेल पर सम्पर्क करें।

नोट- इस सत्र में उन्हीं परिजनों के आवेदन पर विचार किया जायेगा, जिनके पास वैध पासपोर्ट, वीज़ा, ग्रीन कार्ड पहले से हो एवं उनके कोई परिजन विदेश में हैं, इसका प्रमाण हो। आवेदन पत्र-ईमेल में उसकी कॉपी लगाना अनिवार्य है। अन्य आवेदनों पर विचार नहीं किया जायेगा। प्रशिक्षण की तिथि आवेदन प्राप्त होने के पश्चात् संख्या को देखकर निर्धारित की जायेगी, तभी स्वीकृति पत्र भेजा जायेगा।

पत्र व्यवहार का पता- विदेश विभाग,
शान्तिकुञ्ज हरिद्वार, उत्तराखण्ड, पिन-249411
ई-मेल : abroadcell@awgp.org,
Mob : 9258360512

मनुष्य जीवन का मूल उद्देश्य समाज और स्वदेश की सच्ची सेवा करते हुए आत्म-कल्याण करना है।

मालवा में लहलहाई आस्था की फसल

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की उपस्थिति में सेवा-साधना की स्वर्ण जयंती मनाकर धन्य हुए श्री नारायण दास जी

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी दीपयज्ञ के अवसर पर जन-जन की आस्था का अभिसिंचन करते हुए

पलक पाँवड़े बिछा कर किया श्रद्धेय का स्वागत

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का सिरोल्या से 20 किमी. पहले से ही भव्य स्वागत का क्रम आरंभ हो गया। मध्य प्रदेश के शिक्षामंत्री श्री दीपक जोशी ने जिले के प्रवेश द्वार क्षिप्रा (लोहारपिपल्या) पर उनका भावभरा स्वागत किया। मार्ग में राजोदा एवं नापाखेड़ी में भी स्वागत समारोह आयोजित किये गये थे।

14 दिसम्बर को प्रातःकाल आदरणीय डॉ. साहब जब सिरोल्या पहुँचे तब गायत्री माता और गुरुदेव-माताजी के गगनभेदी नारों के बीच श्रद्धालुओं की लम्बी कतार ने पुष्पवर्षा से उनका स्वागत किया।

प्राण प्रतिष्ठा : डॉ. साहब ने गायत्री माता के दर्शन, पूजन के उपरांत शक्तिपीठ परिसर में प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा स्मारक, राधाकृष्ण, शिव परिवार, गंगामाता की प्रतिमा और यज्ञशाला की प्राण प्रतिष्ठा की।

दीक्षा : तत्पश्चात् प्रातः 10.30 बजे 108 कुण्डीय यज्ञशाला में पहुँचकर गुरुदेव-माताजी की सूक्ष्मसत्ता को गुरुरूप में वरण करने को आतुर हजारों लोगों को गुरुदीक्षा दिलाई। इस अवसर पर उन्हें ने गुरु और गायत्री के अवलम्बन की आवश्यकता पर हृदयस्पर्शी उद्बोधन दिया, जिसे सुनकर उपस्थित प्रायः प्रत्येक व्यक्ति दीक्षा लेने या दीक्षा का नवीनीकरण कराने के लिए उत्साहित नजर आया।

नवदम्पतियों को आशीष : 14 दिसम्बर को 20 जोड़ों का सामूहिक आदर्श विवाह भी सम्पन्न कराया गया। शांतिकुंज के प्रमुख प्रतिनिधि ने उन सबको गुरुदेव-माताजी की ओर से आशीष प्रदान किये।

दीप महायज्ञ : सायंकाल दीपयज्ञ में 20,000 लोग शांतिकुंज का संदेश सुनने के लिए उत्साहित थे।

संदेश–सार

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने अपने उद्बोधन में अंतःकरण में उभरी आस्था को भगवान के हृदय में स्थान प्राप्त करने की कसौटी बताया। उन्होंने श्री नारायण दास पुजारी जी की सेवाओं का उल्लेख करते हुए उनका भावभरा अभिनंदन किया। इसके साथ ही इस क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं के सेवा-समर्पण भाव की सराहना की, जिसके कारण पूरा क्षेत्र गायत्री चेतना से ओतप्रोत दिखाई देता है। उन्होंने मालवा की माटी से जुड़ी यादें भी दोहरायीं।

दीपयज्ञ के समय समाज और राष्ट्र की वर्तमान स्थिति पर प्रमुख रूप से चर्चा हुई। गायत्री उपासना एवं ज्ञान साधना से अंतःकरण में उमंगों, सेवा, संवेदना, सहकार के दीप जलाने और समाज में व्याप्त निराशा, अंधकार, अविश्वास के अंधकार को मिटाने के संकल्प जगाये। क्षेत्र में व्याप्त तमाम कुरीतियों की ओर ध्यान दिलाते हुए उन्हें त्यागने और राष्ट्र के नवनिर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान देने का आह्वान उन्होंने किया।

आदरणीय डॉ. साहब को सम्मानित करते श्री नारायण दास जी

समर्पित शिष्य की सक्रियता के 55 वर्ष

सिरोल्या, देवास (म.प्र.) : परम पूज्य गुरुदेव सन् 1959 में सिरोल्या गाँव में पधारे। गाँव में मंदिर के पुजारी के रूप में सेवाएँ दे रहे श्री नारायण दास जी ने तभी से परम पूज्य गुरुदेव का शिष्यत्व स्वीकार लिया और युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित हो गये। उन्हीं के प्रमुख प्रयासों से सन् 81 में गायत्री प्रज्ञापीठ की स्थापना हुई, जिसकी प्राण प्रतिष्ठा करने स्वयं परम पूज्य गुरुदेव सिरोल्या पहुँचे थे।

श्री नारायण दास आज 97 वर्ष के हो चुके हैं। मालवा क्षेत्र में गायत्री परिवार के पुराने नैष्ठिक साधक बताते हैं, ''यहाँ गायत्री परिवार और गुरुजी के जानता ही कौन था? पंडित जी के कारण ही उसका बीजारोपण हुआ। इस क्षेत्र में आज मिशन का जो विस्तार दिखाई देता है वह सब पंडित जी के ही कारण है।''

सन् 1971 में पूज्य गुरुदेव की मथुरा से विदाई के बाद से वे हर वर्ष गायत्री जयंती के अवसर पर अपने गाँव में नौ कुण्डीय यज्ञ का सार्वजनिक आयोजन कराते रहे हैं। वे चाहते थे कि 50 वर्ष से अधिक से चल रहे इस क्रम की पूर्णाहुति एक विशाल समारोह के साथ हो, जिसमें पूज्य गुरुदेव की सूक्ष्म चेतना के संवाहक आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी भी उपस्थित रहें। आदरणीय डॉ. साहब ने उनकी इच्छाओं को पूरा करने का आश्वासन दिया था।

अंततः वह सुयोग 14 दिसम्बर 2014 को बना। आदरणीय डॉ. साहब 12 से 14 दिसम्बर की तारीखों में आयोजित 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में भाग लेने सिरोल्या पहुँचे जहाँ आस्था की फसल लहलहा रही थी। एक वयोवृद्ध युग निर्माणी की गुरुनिष्ठा और जीवनभर की सक्रियता की ऐसी सुंदर परिणति देखकर सभी भावविभोर हो उठे।

कलश यात्रा में छलकी श्रद्धा-सक्रियता की उमंग

इस ऐतिहासिक कार्यक्रम का शुभारंभ विशाल कलश यात्रा से हुआ। इसमें 40 गाँवों के लोगों ने भाग लिया। श्री नारायण दास पुजारी और श्री शिवानंद गिरि ने कलशों का प्रथम पूजन किया। कलश यात्रा प्रज्ञापीठ से प्रारंभ होकर यज्ञस्थल चंद्रवंशी खाती समाज की धर्मशाला पहुँचे।

सिरोल्या वासियों ने घर-घर रंगोलियाँ सजाकर दिव्य चेतना के अवतरण का भावभरा स्वागत किया। पूरे मार्ग पर पुष्पवर्षा हुई, आतिशबाजी भी की गयी। कलश यात्रा में गुरुस्मारक, शिव परिवार, द्वारिकाधीश की झाँकियाँ विशेष आकर्षण थीं।

तीन दिवसीय कार्यक्रम का संचालन करने शांतिकुंज से सर्वश्री नरेन्द्र ठाकुर, जितेन्द्र मिश्र, गौरीशंकर गौर, दिलथिर यादव, नरेन्द्र पाटीदार, भूपेन्द्र शर्मा, खिलावन सिन्हा एवं मनोहर गुरु की टोली पहुँची थी। तीन दिनों तक ज्ञानगंगा प्रवाहित होती रही। आत्मिक विकास और घर-परिवार में स्वर्ग की स्थापना के लिए पूज्य गुरुदेव द्वारा बताये गये सूत्रों पर चर्चा हुई। आस्था संवर्धन के लिए उपासना और जीवन के परिष्कार के लिए कुरीतियाँ त्यागने, सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। विश्व कल्याण की कामना के साथ यज्ञ भगवान को आहुतियाँ समर्पित करने के लिए गाँववासियों की लम्बी कतारें दिखाई दीं।

वयोवृद्ध श्री नारायण दास पुजारी कलश यात्रा से लौटी बहिनों में देवशक्तियों को धारण करने का उत्साह बढ़ाते हुए

विशिष्ट झलकियाँ

- **40** गाँवों का प्रयाज क्रम में किया गया मंथन, दीवार लेखन
- **4000** घरों में की गयी देवस्थापना और साहित्य स्थापना
- **40000** लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया
- **20** जोड़ों के आदर्श विवाह हुए
- **सांसद उज्जैन** श्री मनोहर ऊटवाल 13 दिसम्बर को पधारे और देवपूजन में भाग लिया के कार्यकर्त्ताओं ने व्यक्तिगत संपर्क कर शताधिक लोगों को नशा न करने का संकल्प दिलाने में सफलता पायी

कार्यकर्त्ताओं की कठिन परीक्षा

मौसम ने कार्यकर्त्ताओं की कठिन परीक्षा ली। तेज हवा और बारिश से पूरा यज्ञ पाण्डाल ढह गया और यज्ञशाला भीग गयी। लेकिन कार्यकर्त्ताओं ने भक्ति और साहस का परिचय देते हुए अथक परिश्रम के साथ फिर से सब कुछ ठीक-ठाक कर दिया। सारे कार्यक्रम यथावत हुए। जिस दिन आदरणीय डॉ. साहब श्री सूरज प्रसाद शुक्ला जी के साथ सिरोल्या पहुँचे, उस दिन मौसम साफ था, धूप खिली हुई थी।

दार-ए-सलाम में लगा साहित्य मेला

अन्य नगरों में आयोजन का उत्साह बढ़ा

दार ए सलाम, तंजानिया

29 नवम्बर को तंजानिया में गायत्री परिवार द्वारा युग साहित्य मेला 'गायत्री मेला' लगाया गया। इसे भारतीय मूल के लोगों के अलावा तंजानिया के लोगों ने भी खूब पसंद किया। मेले की सफलता ने युग साहित्य विस्तार वर्ष-2015 में तंजानिया के अन्य नगरों में भी ऐसे पुस्तक मेले लगाकर युग चेतना के विस्तार का उत्साह बढ़ाया है।

दार-ए-सलाम के शिशुकुंज में आयोजित इस मेले का शुभारंभ हिंदू काउंसिल ऑफ तंजानिया के अध्यक्ष श्री स्नेहलभाई बकरानिया और शिशुकुंज के अध्यक्ष श्री जनार्दन शुक्ला द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। इंडियन बिज़नेस काउंसिल के सचिव श्री जयराज भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

गायत्री परिवार ने हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती के अलावा स्थानीय स्वाहिली भाषा में साहित्य उपलब्ध कराया था। वीडियो-ऑडियो सीडी, स्टिकर, फोटो एवं अन्य सामग्री की भी खूब माँग रही। आयोजन स्थल पर पावर पॉइंट प्रेज़ेण्टेशन के साथ मिशन की गतिविधियों को दिखाने की भी व्यवस्था थी, जो निरंतर चलती रही।

आयोजन में सर्वश्री दीपकभाई तन्ना, मनीष भाई, अमिताभ भाई, अनंतराय भाई चोकसी, सूर्यकला बेन, पारूलबेन, आरतीबेन, ममताबेन आदि का भरपूर योगदान रहा। श्री किशोरभाई एवं श्रीमती सरलाबेन ठकरार मुख्य संयोजक थे।

अमेरिका-कनाडा में समूह साधना वर्ष की हलचल

पेंसिलवेनिया में हुआ मौन अंतः ऊर्जा जागरण सत्र

अमेरिका और कनाडा के बीस साधकों ने भाग लिया

अमेरिका और कनाडा के प्रायः सभी चेतना केन्द्रों पर इस प्रकार के शिविर आयोजित किये जायेंगे। अगले क्रम में न्यूजर्सी, कैलीफोर्निया, टैक्सास और वरमोण्ट में शिविर लगाने की योजना है।

समय के साथ उभरते ऊर्जा प्रवाह को धारण कर सत्प्रवृत्ति संवर्धन का लक्ष्य लेकर अमेरिका और कनाडा वासियों ने पहली बार मौन अंतःऊर्जा जागरण शिविर आयोजित किया। 19 नवम्बर की सायं से 23 नवम्बर की प्रातः तक यह शिविर शुयलकिल, पेंसिलवेनिया के ब्रज मंदिर में सम्पन्न हुआ। अमेरिका और कनाडा के 20 प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने इसमें भाग लिया।

शिविर की रूपरेखा पूरी तरह से शांतिकुंज की दिनचर्या के अनुरूप थी। दर्पण साधना, निष्कासन तप, आत्मबोध-तत्वबोध, प्रज्ञायोग, प्राण संचार प्राणायाम, सोहम साधना, जप, यज्ञ, स्वाध्याय आदि समस्त निर्धारित क्रमों को पूरी निष्ठा और उत्साह के साथ किया गया। अत्यंत सादगी के साथ बने भोजन और जलपान को मौन रहकर सामूहिक रूप से ग्रहण करने का आनंद ही निराला था। कतार बद्ध होकर मुख्य ब्रज मंदिर के दर्शन करने जाना, सूर्य अर्घ्य देना आत्मिक दिव्यता की विशेष अनुभूति कराने वाला था।

प्रथम प्रयोग बहुत ही सफल और उत्साहवर्धक रहा। सर्वश्री महेश भट्ट, ममता कापडिया, स्वाती पटेल और सायमन डेनिस शिविर के मुख्य संयोजक थे। विपुल पटेल, भावेश लाड, शिखा सक्सेना, प्रवीण कापड़िया, रचना जिरथ, गीता चौधरी आदि ने आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराने में भरपूर सहयोग दिया।

अंत में पूरे शिविर की समीक्षा की गयी। सभी साधकों ने अपने अनुभव बताये। परिजनों के उत्साहवर्धन से इस क्रम को निरंतर बनाये रखने के संकल्प उभरे। शिविर को और प्रभावशाली बनाने के लिए प्रशिक्षक तैयार करने की आवश्यकता अनुभव की गयी, जिसके लिए विशेष 21 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर लगाने की माँग उन्होंने शांतिकुंज से की है।

हम ऊँचे उठ रहे हैं या नीचे गिर रहे हैं-इसकी एक ही कसौटी है कि अपनी आँखों में हमारा अपना मूल्य घट या बढ़ रहा है ?

पुस्तक मेलों से युग निर्माण आन्दोलन का हर क्षेत्र, हर वर्ग में विस्तार

अथक पुरुषार्थ, असाधारण सफलता

- ₹ 621000 पाँच दिन में का युग साहित्य बिका
- 3200 पुस्तकों की साहित्य सूची उपलब्ध थी
- पावर पॉइंट प्रेज़ेण्टेशन से बढ़ी लोकप्रियता और सफलता

मोडासा, अरवल्ली (गुज.)

19 से 23 नवम्बर की तारीखों में मोडासा में अभूतपूर्व पुस्तक मेला आयोजित हुआ। आयोजकों की अथाह लगन और अथक परिश्रम ने इसे शानदार सफलता दिलाई। जिला कलेक्टर से लेकर नगर के अधिकारी, प्रबुद्ध जनों में से शायद ही ऐसी विभूति हो जिसने इस पुस्तक मेले का लाभ न लिया हो। हर धर्म-पंथ के लोग आये और उत्साहपूर्वक सत्साहित्य का प्रसाद लेकर लौटे। कुल छः लाख इक्कीस हजार रुपये का साहित्य पाँच दिनों में बिका। सारा साहित्य ब्रह्मभोज में उपलब्ध था। परिजनों ने इसके प्रचार-प्रसार में किसी प्रकार की कोई कसर नहीं रखी थी।

परम पूज्य गुरुदेव द्वारा लिखे सारे साहित्य की सूची इस पुस्तक मेले में प्रदर्शित की गयी थी, जो उनके हिमालय से विराट व्यक्तित्व का परिचय देती थी। वाङ्मय क्रमांक-1 में वर्ष-दर-वर्ष लिखे गुरुदेव के साहित्य की सूची भी बड़े अक्षरों में लगायी गयी थी।

मेला स्थल पर डार्करूम बनाकर मिशन की गतिविधियाँ और साहित्य के चुटीले अंश प्रेज़ेण्टेशन के माध्यम से दिखाये जाते रहे। इसने लोगों को अपनी मन पसंद का साहित्य चुनने में बड़ी मदद की।

मोडासा के पुस्तक मेले में लगी पाठकों की भीड़

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धांजलि

श्रीमती मुन्नी देवी, सरसावा, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

सरसावा की कार्यकर्त्ता श्रीमती मुन्नी देवी का 27 अक्टूबर को निधन हो गया। सन् 1987 में वे मिशन से जुड़ीं और उसके बाद आजीवन एक समर्पित स्वयंसेविका के रूप में सक्रिय रहीं। अश्वमेध यज्ञ में उन्होंने भरपूर सेवाएँ दीं।

श्री रामसुंदर चतुर्वेदी, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

शक्तिपीठ, ग्वालियर के पूर्व मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री रामसुंदर चतुर्वेदी का 30 अक्टूबर को 78 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। एक शिक्षक के रूप में शासकीय सेवाएँ प्रदान करते हुए उन्होंने पूज्य गुरुदेव के विचार और संस्कारों का भरपूर प्रचार-प्रसार किया।

श्री राधेश्याम रानावत, रठाना, मंदसौर (मध्य प्रदेश)

ग्राम रठाना निवासी कर्मठ कार्यकर्ता श्री राधेश्याम रानावत का 60 वर्ष की आयु में दिनांक 5 नवम्बर को निधन हो गया। वे गायत्री तपोभूमि, मथुरा के युग निर्माण विद्यालय के विद्यार्थी भी रहे। सरल स्वभाव के मृदुभाषी एवं मिलनसार व्यक्तित्व के धनी श्री राधेश्याम साथी कार्यकताओं के प्रेरणा स्रोत थे।

श्रीमती सरोज चौधरी, भोपाल (मध्य प्रदेश)

भोपाल की कार्यकर्ता श्रीमती सरोज चौधरी, धर्मपत्नी श्री एसआर चौधरी का 5 नवम्बर को देहावसान हो गया। वे एक प्रखर साधिका थीं। मिशन की अखण्ड ज्योति एवं युग निर्माण योजना पत्रिकाओं की वितरक, कुशल संगठक एवं संवेदनशील पुरोहित थीं।

श्री कृष्ण कुमार शर्मा, जहानाबाद (बिहार)

मखदुमपुर प्रखण्ड के ग्राम पुनहदा निवासी 60 वर्षीय समर्पित कार्यकर्त्ता श्री कृष्ण कुमार शर्मा का 6 नवम्बर को आकस्मिक देहावसान हो गया। जामताड़ा में रेंज ऑफिसर के पद पर कार्यरत स्व. श्री शर्मा जी ने पुनहदा और जामताड़ा में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञों का आयोजन कराया था।

श्री सीताराम अग्रवाल, लांजी, बालाघाट (मध्य प्रदेश)

गायत्री शक्तिपीठ लांजी के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री सीताराम अग्रवाल का 88 वर्ष की दीर्घायु में 16 नवम्बर को निधन हो गया। 71 में मिशन से जुड़ने के बाद जीवन पर्यंत उन्होंने अपनी जिम्मेदारी निष्ठापूर्वक निभायी। शक्तिपीठ के निर्माण में उनका अग्रणी योगदान था।

इंजीनियरिंग कॉलेजों में

- हर कक्षा के लिए निर्धारित था अलग-अलग समय

वडोदरा (गुजरात)

गायत्री शक्तिपीठ आमोदर (खटंबा) द्वारा सिग्मा ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स और वडोदरा इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी, कोटंबी में पुस्तक मेले लगाये गये। क्रमशः 10 हजार और 3 हजार विद्यार्थियों ने इसका लाभ लिया। आयोजकों ने इनमें समग्र साहित्य ब्रह्मभोज में उपलब्ध कराया था।

शक्तिपीठ द्वारा लगाये गये इन पुस्तक मेलों में साहित्य और उसके रचयिता युगऋषि का विस्तृत परिचय देने का प्रशंसनीय कार्य आयोजकों द्वारा किया गया। विद्यार्थियों को अलग-अलग वर्गों में बाँटकर उन्हें एक-एक घंटे के लिए पुस्तक मेला स्थल पर लाया गया। पहले विस्तार से जानकारी देकर इन पुस्तकों की महत्ता बतायी गयी, फिर विक्रय केन्द्रों पर सेवा दे रहे परिजनों ने मनचाही पुस्तक का चयन करने में उनकी सहायता की। दोनों ही शिक्षण संस्थानों ने विद्यार्थियों के नैतिक विकास के लिए गायत्री परिवार की सेवाओं के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

वडोदरा में युग साहित्य देखते इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र

काशी के 43 स्कूलों में लगे पुस्तक मेले

वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

युगऋषि पुस्तक मेला आयोजन समिति द्वारा विद्यालयों में लगाये जा रहे पुस्तक मेलों की लोकप्रियता निरंतर बढ़ रही है। वहाँ के विद्वान इस साहित्य में देश और मानवता का भविष्य सँवरता देख रहे हैं और इसके स्वाध्याय से अपने संस्कार और विचारों को परिष्कृत करने की प्रेरणा दे रहे हैं।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय की एक इकाई सेंट्रल हिंदू बॉयज़ स्कूल कमच्छा में 10 से 14 नवम्बर की तारीखों में लगाये गये पुस्तक मेले का उद्घाटन करते हुए शिक्षा संकाय के अध्यक्ष प्रो. हरिकेश सिंह ने कहा कि पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का साहित्य ही मानव चिंतन को श्रेष्ठ बनाने में सक्षम है। यह स्कूलों में पुस्तक मेलों की शृंखला का 43 वाँ पुस्तक मेला था।

इससे पूर्व सी.एम. एंग्लो-बंगाली इ.कॉ. भेलूपुर में लगाये गये पुस्तक मेले पर दैनिक जागरण ने अपनी टिप्पणी करते हुए लिखा- नई पीढ़ी को तमाम संकटों से बचाने और संस्कृति की थाती सहेजने की सीख ऐसे सत्साहित्य के मेले से अवश्य मिलेगी। यहाँ डॉ. अर्चना उपाध्याय एवं श्रीमती अर्चना सारस्वत के सौजन्य से बच्चों को आधे मूल्य पर साहित्य उपलब्ध कराया गया था।

हिंदू बॉयज स्कूल, वाराणसी में

शहीद हो गये युवा युग सृजेता

मनीराम पुजारी | चिगाराम नाग | कमलेश मरकाम

कोरबा (छत्तीसगढ)

.कोरबा में आयोजित प्रांतीय युवा चेतना शिविर में भाग लेकर लौटते हुए एक दुःखद सड़क दुर्घटना घटी, जिसमें सुकमा जिले के छिंदगढ़ ब्लॉक के निवासी अपने मिशन के चार होनहार युवा कार्यकर्त्ता-धोबनपाल गाँव के कमलेश मरकाम, मुर्रेपाल गाँव के चिंगाराम नाग, कांजीपानी गाँव के वरिष्ठ कार्यकर्ता मनीराम पुजारी तथा ग्राम पाकेला के शिक्षाकर्मी सुरेन्द्र कूजून का निधन हो गया। इस समाचार को पाकर पूरे क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गयी। शक्तिपीठ कोरबा पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित करते हुए समस्त परिजनों ने इन दिवंगत आत्माओं को भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की। उनके परिवारजनों को तत्काल आर्थिक सहायता प्रदान की गई। सुकमा जिले के गायत्री परिजनों ने बड़ी संख्या में उनके अंतिम संस्कार में भाग लेते हुए अपनी भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की।

हर क्षेत्र में उत्साह बढ़ाया

शिमला (हिमाचल प्रदेश)

शिमला में ऐतिहासिक गेयटी थियेटर, दी माल में 10 अक्टूबर से 17 अक्टूबर तक विशाल पुस्तक मेले का अयोजन किया गया। 8 दिनों तक चलने वाले इस पुस्तक मेले में पंडित श्री राम शर्मा द्वारा लिखित साहित्य की प्रदर्शनी लगाई गयी। पुस्तक मेले में बगो से लेकर बूढ़े तक सभी ने रुचि दिखाई। समाज के हर वर्ग-छात्र-छात्राएं, अध्यापक, डॉक्टर, एडवोकेट, प्रबुद्धजनों ने पुस्तकें देखी एवं खरीदीं। एक आगन्तुक श्री प्रवीण शर्मा, सहायक प्राध्यापक ने लिखा- यह पुस्तक मेला वास्तव में केवल मेला नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति एवं सनातन धर्म का उत्सव है।

पुस्तक मेले का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के उपकुलसचिव श्री ए.डी.एन. वाजपेयी द्वारा किया गया। उन्होंने 30 मिनट तक इसका अवलोकन किया एवं अपने लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें भी खरीदीं। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए तथा आध्यात्मिक चेतना के जागरण हेतु ये पुस्तकें काफी उपयोगी हैं। युवा पीढ़ी के लिए इस तरह का आयोजन किसी वरदान से कम नहीं।

पुस्तक मेले में कुल 3.10 लाख की पुस्तकों की ब्रिकी हुई। बाल निर्माण की कहानियाँ, सफल जीवन की दिशाधारा, गृहस्थ एक तपोवन, चार खंड में वेद आदि पुस्तकों की काफी माँग रहीं। समापन के अवसर पर साहित्य लगभग समाप्त ही हो गाया था। इस अवसर पर श्री वी.के. भटनागर ने सभी परिजनों का हार्दिक धन्यवाद किया।

बैतूल (मध्य प्रदेश)

बच्चों में साहित्य पढ़ने की आदत डाली जाए तो उनका बौद्धिक विकास तीव्र हो जाता है। विद्यार्थी जीवन में अच्छे साहित्य का साथ मिलने से विद्यार्थियों का संपूर्ण व्यक्तित्व निखरता है। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा लिखित पुस्तकें विद्यार्थियों के लिए ज्ञान का जखीरा हैं।

यह विचार सरस्वती शिशु मंदिर कालापाठा की प्राचार्य ने अपने विद्यालय में 9 एवं 10 नवम्बर को आयोजित पुस्तक मेले में व्यक्त किये। पुस्तक मेले का आयोजन महिला मंडल, विकास नगर बैतूल द्वारा किया गया। विद्यार्थियों ने पुस्तक मेला में महापुरुषों की जीवनी, अधिकतम अंक कैसे लाएँ, बुद्धि बढ़ाने की वैज्ञानिक विधि जैसी पुस्तकों में विशेष रुचि दिखाई।

खरगोन (मध्य प्रदेश)

13 से 16 नवम्बर में खरगोन में 4 दिवसीय पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन मण्डलेश्वर तहसील के विधायक श्री राजकुमार मेवे ने किया। गायत्री परिवार इन्दौर के श्री ओमप्रकाश जाधव ने युग साहित्य का महत्व बताते हुए कहा कि आज के विपरीत वातावरण में जनमानस के विचार बदलने में गुरुदेव का साहित्य महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। श्रीमती सोना कुशवाह, श्रीमती प्रेमलता कौशल, श्री कन्हैयालाल जी, इन्दौर के श्री किशोर पाटीदार ने पुस्तक मेले की सफलता में अहम योगदान दिया।

अमेठी, सुल्तानपुर (उत्तर प्रदेश)

भेल, जगदीशपुर के शिव मंदिर परिसर में 31 अक्टूबर एवं 1 नवम्बर को युग निर्माणी पुस्तक मेला आयोजित हुआ। इसमें विद्यार्थियों, युवाओं एवं प्रबुद्धों ने उत्साह पूर्वक भागीदारी की। मेले का शुभारम्भ भेल के महाप्रबंधक श्री दीपक मेहता ने किया। उन्होंने परम पू%य गुरुदेव के साहित्य को बहुत पसंद किया एवं ऐसे आयोजनों की प्रशंसा की।

मझोला, कासगंज

गायत्री शक्तिपीठ मझोला के संस्थापक स्व. श्री सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव की प्रथम पुण्य तिथि पर 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन हुआ। 3 से 7 नवम्बर तक चले इस कार्यक्रम में स्व. सुरेश जी के अधूरे कार्य तथा गुरूदेव के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प परिजनों ने लिया। 3 नवम्बर को 108 बहनों की टोली ने सिर पर कलश धारण कर प्रभात फेरी निकाली। शांतिकुंज प्रतिनिधि ने नवयुग की स्थापना में बहिनों की भूमिका पर उद्बोधन दिया। 5 एवं 6 नवम्बर को प्रज्ञा पुराण कथा में व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण के महत्व को लोगों ने काफी रुचिपूर्वक सुना।

भुबनेश्वर (ओडिशा)

14 से 22 नवम्बर की तारीखों में भुबनेश्वर में राष्ट्रीय आध्यात्मिक पुस्तक मेला आयोजित हुआ। गायत्री परिवार की दिया टीम ने भी इसमें भाग लेते हुए युग साहित्य प्रदर्शनी लगायी। 20 हजार रुपये का साहित्य नये घरों में पहुँचा। अखण्ड ज्योति के 15 नये सदस्य बने। उल्लेखनीय है कि दिया टीम के सदस्यों ने अखण्ड ज्योति सदस्यता अभियान आरंभ कर दिया है। वे हर रविवार को प्रचार पत्रक लेकर पार्क, ऑफिसों में सम्पर्क करने निकल जाते हैं।

अपने पास जो शक्तियाँ हैं, उन पर विश्वास करना और उन्हें अच्छे काम में प्रयुक्त होने का अवसर देना ही 'आत्म विश्वास' है।

गायत्री चेतना केन्द्र, नोएडा में संगोष्ठी

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में मिशन के विस्तार के लिए बनायी योजनाएँ

गायत्री चेतना केन्द्र, नोएडा ने वर्ष 2015-16 में पूरे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में सृजन चेतना के विस्तार के लिए व्यापक अभियान आरंभ कर दिया है। इसकी कार्ययोजना से सभी को अवगत कराने के लिए 16 नवम्बर 2014 को गायत्री चेतना केन्द्र, नोएडा पर विशेष कार्यकर्त्ता गोष्ठी आयोजित हुई। केन्द्र व्यवस्थापक श्री जे.पी. वर्मा की अध्यक्षता में हुई इस गोष्ठी में पूरे एनसीआर के आठ-नौ सौ कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया।

इस गोष्ठी में कार्ययोजना पर विचार-विमर्श और शंका सामाधान के साथ संकल्प पत्रों के माध्यम से कार्यकर्त्ताओं के योगदान का आकलन भी किया गया। श्री वर्मा जी ने अपने-अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक कार्यकर्त्ता, सहयोगी-समर्थक तैयार करने और संकल्प पत्रों के माध्यम से उनकी जानकारियाँ एकत्रित करने का आह्वान सभी कार्यकर्त्ताओं से किया।

कुछ प्रमुख अभियान :

1. स्वच्छता : 30 नवम्बर से साप्ताहिक स्वच्छता अभियान का शुभारंभ हुआ। इसके अंतर्गत हर शाखा से प्रत्येक रविवार को पूर्व निर्धारित स्थल पर सामूहिक स्वच्छता अभियान चलाने और दीपयज्ञ से उसका समापन करते हुए स्वच्छता के प्रति जनचेतना जगाने का आह्वान किया जा रहा है। नये क्षेत्रों में भी टीम का गठन कर साप्ताहिक स्वच्छता अभियान चलाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

चेतना केन्द्र के निकट के पार्क से आरंभ किया साप्ताहिक स्वच्छता अभियान

कार्ययोजना की विस्तृत जानकारी, अपने सहयोग और भागीदारी की सूचना के लिए संपर्क करें :
गायत्री चेतना केन्द्र, क्यू-2, सेक्टर-12, नोएडा (उ.प्र.)
फोन-0120-4272383, 4272385
ई-मेल : gck_noida@rediffmail.com

2. साधना : गायत्री चेतना केन्द्र पर पिछले 10 माह से प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक मौन साधना का क्रम अनवरत रूप से चल रहा है, जिसे 12 वर्ष (सन् 2026) तक चलाने का संकल्प है। केन्द्र व्यवस्थापक ने इसमें अधिकाधिक लोगों की भागीदारी के साथ विभिन्न शाखाओं द्वारा भी ऐसा ही साप्ताहिक साधना क्रम आरंभ करने का आह्वान किया।

3. संगठन : विनम्र, सच्चरित्र लोगों का चयन कर उनकी टोलियाँ बनाना और विभिन्न रचनात्मक अभियानों में उन्हें लगाना।

4. प्रशिक्षण : विद्यालयों में व्यक्तित्व परिष्कार कार्यशाला, अखण्ड ज्योति पाठक सम्मेलन, स्वास्थ्य मेले, सामयिक समस्याओं पर नुक्कड़ नाटक, घर-घर यज्ञ एवं दीपयज्ञ आदि को अधिकाधिक प्रोत्साहिन दिया जा रहा है। इन कार्यक्रमों के संचालन के लिए कार्यकर्त्ताओं को गायत्री चेतना केन्द्र द्वारा प्रशिक्षित करने की योजना भी बनायी गयी।

5. भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा : में सहयोग करने वाले शिक्षकों को मिशन का परिचय कराते हुए उनका सम्मान करने का निर्णय लिया गया।

नेपाल में गायत्री अश्वमेध की तैयारियाँ आरंभ

बीरगंज में नवम्बर-2015 में होना है अश्वमेध महायज्ञ

नेपाल में अश्वमेध महायज्ञ के आयोजन के समाचारों से स्थानीय लोगों में उत्साह की लहर दौड़ गयी है। शांतिकुंज के जोनल प्रभारियों द्वारा वहाँ कई समूह-संस्थाओं में अश्वमेध की तैयारियों के संदर्भ में गोष्ठियों का आयोजन किया जिनमें यह उत्साह साफ दिखाई देता था।

19 नवंबर को भरहवाँ, 20 को नवलपरासी शक्तिपीठ, 21 को काठमाण्डू के कार्यकर्त्ताओं के बीच गोष्ठियाँ कर शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री ओइन्द्र सिंह एवं श्री राकेश जायसवाल ने लोगों को अश्वमेध महायज्ञ के लाभ तथा कार्यक्रम की तैयारियों की जानकारी दी। 22 नवम्बर को नारायनघाट में व्यापार मण्डल के 100 श्रीमंतों से चर्चा करते हुए नेपाल राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक उत्थान के लिए अपना सहयोग प्रदान करने का आह्वान किया, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया है।

स्कूली विद्यार्थियों को संबोधित करते शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री राकेश जायसवाल

बीरगंज के स्कूल-कॉलेज गायत्री अश्वमेध महायज्ञ को अपने क्षेत्र का गौरव मान रहे हैं। लगभग 50 स्कूल-कॉलेज के प्रबंध निदेशकों के साथ हुई गोष्ठी में बच्चों में नैतिकता विस्तार और संस्कार परंपरा के पुनर्जीवन पर चर्चा हुई। सभी सहमत हुए। उन्होंने अतिथियों की आवास व्यवस्था में अपना पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया है।

चैंबर ऑफ कॉमर्स, बीरगंज में 'कार्य दक्षता विकास' तथा 'जीवन लक्ष्य एवं व्यवहार' विषय पर शांतिकुंज प्रतिनिधियों ने युगऋषि का संदेश दिया। बीरगंज के प्रधान शिक्षण संस्थान एमबीए में युवाओं में नेतृत्व क्षमता के विकास पर कार्यशाला आयोजित की गयी। दोनों कार्यक्रमों के माध्यम से प्रतिभागागियों को शांतिकुंज की विचारधारा का परिचय मिला। युगऋषि के जीवन दर्शन के प्रति सभी बहुत उत्साहित दिखाई दिये। इन कार्यक्रमों ने लोगों में गायत्री अश्वमेध महायज्ञ के प्रति जबरदस्त उत्साह जगाया है।

स्काउटिंग व्यक्तित्व विकास की एक कला है। -आद. श्री गौरीशंकर जी

शांतिकुंज में आयोजित हुआ स्काउट-गाइड का प्रशिक्षण एवं जाँच शिविर

देश के नागरिकों में हम जिस देशभक्ति और वीरता की अपेक्षा करते हैं, वे अनायास ही विकसित नहीं होते। बचपन से ही उनका अभ्यास कराये जाने से ही वह जीवन का संस्कार बन पाता है। इस दृष्टिकोण से स्काउट-गाइड एक उत्तम जीवन शैली है। यह कोई संस्था मात्र नहीं, अनुशासन, वीरता, सेवा और सहयोग के संस्कारों का पर्याय है। यह जीवन को सुगढ़-संस्कारवान बनाने और शारीरिक, मानसिक दृढ़ता प्रदान करने की कला है।

शांतिकुंज व्यवस्थापक एवं जिला युग निर्माण स्काउट-गाइड के मुख्य संरक्षक आदरणीय श्री गौरीशंकर शर्मा जी ने 14 से 18 दिसम्बर की तारीखों में शांतिकुंज में आयोजित रोवर-रेंजर्स प्रशिक्षण एवं जाँच शिविर का उद्घाटन करते हुए यह उद्गार व्यक्त किये। इस शिविर में उत्तराखंड के पिथौरागढ़, चमोली, नैनीताल, उत्तरकाशी, खटिमा, रामनगर, हल्द्वानी, बड़कोट के महाविद्यालयों के 94 रोवर्स, रेंजर्स ने भाग लिया। स्काउट प्रशिक्षण आयुक्त श्री सीताराम सिन्हा, प्रो धनसिंह माहोडी, प्रशिक्षण केन्द्र के जिला संगठन आयुक्त श्री मंगल गढ़वाल, एएसओसी श्री विमला पंत, क्षेत्रीय प्रशिक्षक श्री राहुल रतौड़ी, जिला सचिव श्री कृष्ण दत्त उनियाल, श्री हरपाल ठाकुर, श्री इब्ने हसन आदि ने पाँच दिवसीय प्रशिक्षण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

स्काउटिंग के गुर सीखते विद्यार्थी

आंध्र प्रदेश के 21 गाँवों में महिला मण्डलों के गठन का संकल्प

कुरुपम, विजयनगर (आं.प्र.)

माता भगवती देवी प्रज्ञापीठम् कुरुपम ने ग्रामीण अंचल में महिला मण्डलों की स्थापना कर गाँव-गाँव में गायत्री उपासना का वातावरण बनाने, सामाजिक सुधारों के लिए जागरूकता लाने के लिए एक विशाल महिला सम्मेलन का आयोजन किया। 2 नवम्बर को आयोजित इस सम्मेलन में 21 गाँवों से आये मिशन के प्रति आस्था रखने वाले 2000 भाई-बहिन शामिल हुए।

कार्यक्रम का शुभारंभ विशाल शोभायात्रा से हुआ। गायत्री चेतना केन्द्र, हैदराबाद से आये श्री वेणुगोपाल रेड्डी, विशाखा-पटनम जोन के प्रतिनिधि सावित्री अम्मा, श्री बीएन राव, चलामैयाजी ने कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि स्वच्छता-सुंदरता तो प्रशासनिक प्रयासों से आ सकती है, लेकिन स्वर्ग तो विचारों में परिवर्तन से ही संभव है। युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने विचार क्रांति का जो अभियान आरंभ किया है, उसे गाँव-गाँव, घर-घर पहुँचाकर लोगों के विचारों को बदलना हमारा नैतिक दायित्व है। इसके लिए भरपूर सेवा, समर्पण भावना के साथ मिल-जुलकर प्रयास करने होंगे। गाँव-गाँव उपासना-साधना का वातावरण बनाने के लिए मण्डलों की स्थापना करनी होगी।

विशाल महिला सम्मेलन को संबोधित करते श्री वेणुगोपाल रेड्डी

आंध्र प्रदेश के ग्रामीण अंचल में जनजागृति बढ़ाने का यह सुंदर प्रयास स्थानीय वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री शंकरराव, गुरुमूर्ति, आदिनारायण आदि के मुख्य योगदान से सम्भव हुआ। सभी के सहयोग से 21 गाँवों में महिला मण्डलों के गठन का संकल्प बहिनों ने लिया।

अपनी सुविधाओं की ही न सोचें शांतिकुंज की गरिमा का भी ध्यान रखें

शांतिकुंज परम पूज्य गुरुदेव द्वारा युग निर्माण जैसे महान प्रयोजन के लिए बनायी गयी एक अकादमी है, परम पूज्य गुरुदेव के सतयुगी सपनों का महल है। इसकी गरिमा को बनाये रखकर पूज्य गुरुदेव के अभीष्ट उद्देश्य को पूरा करना हम सबका परम कर्त्तव्य है। इसके लिए जरूरी है कि हम केवल अपनी सुविधाओं की बात ही न सोचें, इसे धर्मशाला न बनने दें। जिनमें कुछ सीखने और बनने की जिज्ञासा है, जो इसकी ऊर्जा को धारण कर अपने और समाज को बदलने के लिए उत्साहित हैं, केवल उन्हीं लोगों को शांतिकुंज भेजें, वही लोग शांतिकुंज आयें। इसे धर्मशाला न बनने दें।

कृपया विशेष ध्यान दीजिए :

शांतिकुंज केवल नीचे लिखे प्रयोजनों के लिए ही आयें।

1. यहाँ चलने वाले विभिन्न शिक्षण सत्रों और विशेष संगोष्ठियों में पूर्व अनुमति लेकर ही भाग लेने आयें। पूर्व अनुमति के लिए अपना लिखित आवेदन "व्यवस्थापक, गायत्रीतीर्थ-शांतिकुंज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन-249411" के पते पर भेजें। इंटरनेट (awgp.org) से आवेदन फार्म भी डाउनलोड किये जा सकते हैं। आवेदन ईमेल-(shivir@awgp.org) से भी भेजा जा सकता है।

2. जिन्हें शांतिकुंज में कोई संस्कार कराना हो, वे आयें।

3. शांतिकुंज तीर्थ सेवन के लिए पूर्व अनुमति लेकर आने वाले परिजन अधिकतम तीन दिन तक यहाँ रह सकते हैं। ऐसे परिजनों के लिए यहाँ चलने वाली दिनभर की गतिविधियों में भागीदारी अनिवार्य होगी।

- **जो परिजन पर्यटन की दृष्टि से हरिद्वार आ रहे हैं, वे अपने आवास की व्यवस्था अन्यत्र ही करें। वे वहाँ रहकर भी शांतिकुंज आकर यज्ञ, दर्शन, प्रणाम आदि कर सकते हैं।**
- **शांतिकुंज आने वाले परिजन अपने साथ सरकारी मान्यता प्राप्त कोई पहचान पत्र अवश्य लेकर आयें।**
- **परिजनों से निवेदन है कि वे पर्यटन के लिए आ रहे लोगों को शांतिकुंज में ठहरने की अनुशंसा के साथ बिलकुल न भेजें।**

पुंसवन संस्कार पर सेमीनार

सतना (मध्य प्रदेश)

गायत्री परिवार और माहेश्वरी समाज ने सतना के बिरला हॉस्पिटल में 14 नवम्बर को पुंसवन संस्कार के वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण पर एक सेमीनार का आयोजन किया। डॉ. संजय माहेश्वरी ने इसकी अध्यक्षता करते हुए इसमें भाग लेने वाले शहर के गणमान्य डॉक्टरों का स्वागत किया।

सेमीनार की मुख्य वक्ता डॉ. अमिता सक्सेना थीं। उन्होंने गुरुदेव के विचारों की व्याख्या करते हुए पुंसवन संस्कार को शिशु के बुनियादी विकास का एक सशक्त और विज्ञान सम्मत आध्यात्मिक प्रयोग बताया। उन्होंने कहा कि शिशु का 80 प्रतिशत विकास गर्भावस्था में ही हो जाता है, इस दृष्टि से मनचाही संतान पाने के लिए न केवल गर्भिणी को बल्कि उसके पूरे परिवार व समाज को माता के शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य पर पूरा-पूरा ध्यान देना चाहिए। उन्होंने पावर पॉइंट प्रेजेण्टेशन के आधार पर माता के आहार-व्यवहार, विचार के कारण शिशु के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी दी।

माता-पिता अपने बच्चों का स्वस्थ विकास कैसे करें? इसकी जानकारी शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. गाँधी ने बाल मनोविज्ञान के आधार पर दी। सभी चिकित्सकों ने सेमीनार की सराहना करते हुए समाज में मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए पुंसवन संस्कार के प्रति जनजागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता एकमत से स्वीकार की।

'विचार क्रांति' सेमीनार

युवा दिलों में परिवर्तन की उमंग जगाने के लिए 'दिया' मुंबई द्वारा किया गया उत्कृष्ट प्रयास

दीप प्रज्वलन करते आद.डॉ. साहब व श्री दिनेश विजयवर्गीय

आज राष्ट्र के नवनिर्माण में युवाशक्ति की महती भूमिका से कोई इन्कार नहीं कर सकता। अतः युवाओं की अंतःचेतना को जगाने के लिए और उन्हें नयी सोच के साथ समाज के नवनिर्माण में जुट जाने हेतु प्रेरित करने के लिए दिया, मुंबई ने 13 दिसम्बर को दादर, पूर्व के योगी सभागृह में विशाल 'विचार क्रांति' सेमीनार का आयोजन किया गया। अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी सेमीनार के मुख्य वक्ता थे। एक जीवन सिद्ध अध्यात्मवेत्ता, परम पूज्य गुरुदेव-परम वंदनीया माताजी का निकटतम सान्निध्य प्राप्त वक्ता के विचारों को सुनने, उनका सान्निध्य प्राप्त करने का लोगों में भरपूर उत्साह था।

दिया, मुंबई ने पिछले चार माह की कड़ी तैयारियों के साथ इसका आयोजन किया था। तमाम प्रतिष्ठित औद्योगिक संस्थानों, शिक्षण संस्थानों, प्रशासनिक संस्थानों, व्यवसायी एवं अन्य बुद्धिजीवियों को इसमें आमंत्रित किया गया था। मुंबई और आसपास की गायत्री परिवार की सभी शाखा के परिजनों ने इसमें भाग लिया। प्रवेश पास, जो गायत्री परिवार द्वारा उपलब्ध कराये गये थे, के आधार पर प्रवेश की व्यवस्था थी। लगभग 2800 व्यक्तियों ने इसका लाभ लिया।

तीन घंटे के सेमीनार का शुभारंभ आद. डॉ. प्रणव जी और श्री दिनेश विजयवर्गीय द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। श्री ओंकार पाटीदार द्वारा प्रस्तुत ओजस्वी प्रज्ञागीतों ने श्रोताओं के अंतस् को क्रांति की उमंगों से तरंगित कर दिया। शांतिकुंज से आये युवा दम्पति श्रीमती मंजरी एवं अंकुर मेहता तथा आईआईटी जोधपुर के प्रोफेसर विवेक विजयवर्गीय के संचालन में छिपी युगऋषि की वेदना समारोह को उद्देश्यपूर्ण बनाने में उत्प्रेरक की भूमिका निभाती रही। सर्वश्री सूरज प्रसाद शुक्ला, संतोष सिंह, दिनेश पटेल, दीनाबेन त्रिवेदी, योगीराज बल्कि ने भी इस अवसर पर उपस्थित होकर कार्यक्रम की सफलता में योगदान दिया।

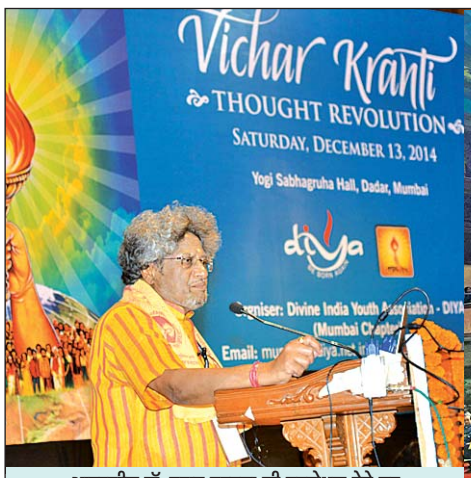

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी उद्बोधन देते हुए

आदरणीय डॉ. साहब द्वारा दिया गया संदेश

आजादी के पूर्व से ही परम पूज्य गुरुदेव की स्पष्ट धारणा थी कि समाज की वर्तमान स्थिति को बदलने के लिए व्यक्ति की सोच को बदलना जरूरी है। विचार बदलेंगे तो व्यक्ति भी बदल जायेंगे। उन्होंने अखण्ड ज्योति के प्रथम अंक के प्रकाशन के साथ ही विचार क्रांति की बुनियाद रखी। उन्होंने लोगों को अध्यात्म को वैज्ञानिक आधार पर देखने और समझने की दृष्टि समाज को दी। अध्यात्म के सूत्रों को स्वयं जीकर बताया कि उन्हें कैसे जिया और लाभ उठाया जा सकता है। उन्होंने वेद, उपनिषद्, दर्शन, पुराण, आरण्यक, ब्राह्मण आदि का भाष्य करते हुए उनकी शिक्षाओं को प्रगतिशील सोच के साथ अपनाने की टिप्पणियाँ की हैं।

परम पूज्य गुरुदेव का विचार क्रांति अभियान मूढ़ मान्यताओं, अंध विश्वासों और निराधार कुरीतियों को दूर कर समय के साथ प्रगतिशील सोच अपनाने के लिए प्रेरित करता है। वह धर्म-अध्यात्म के सूत्रों को अपनाकर आंतरिक शक्तियों के विकास की प्रेरणा देता है, ताकि पश्चिम का अंधानुकरण करते हुए मात्र धन-साधन जुटाने में ही वेशकीमती जीवन निरर्थक न चला जाये।

मानवता पर अस्तित्व का खतरा मँडरा रहा है। विश्व आतंक के साये में जी रहा है। गरीबी, भुखमरी, भ्रष्टाचार, जातिभेद, सत्ता लोलुपता जैसी समस्याएँ हमारे देश में भयानक संकट बनकर प्रगति का पथ रोक रही हैं। आजादी के 67 वर्ष बाद भी हमारी सोच में कोई बड़ा बदलाव नहीं आया है। इन सबके समाधान के लिए विचार क्रांति की आवश्यकता है।

विचार क्रांति की आवश्यकता है, ताकि कोई मोहनदास करमचंद गाँधी इस दर्द को अनुभव करे और अपनी बैरिस्टरी में ही उलझे रहने की बजाय देश और समाज की सेवा की अहमियत समझे। कोई रूसो, कोई कार्ल मार्क्स छोटी-सी सही, किंतु ऐसी शुरुआत की पहल कर सके जिसे अपनाना विश्व मानवता के लिए सहज हो जाये।

परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के क्रांतिकारी विचार ऐसे ही परिवर्तन की दस्तक दे रहे हैं। आवश्यकता है उनकी ताकत को अनुभव करने की, उन्हें जीकर औरों के समक्ष अपना आदर्श उपस्थित करने की।

दिया, मुंबई एक आदर्श युवा संगठन

दिया, मुंबई द्वारा राजकीय दंत महाविद्यालय में पर सेमीनार आयोजित हुई

गायत्री परिवार के युवा संगठन 'डिवाइन इंडिया यूथ एसोसिएशन' (DIYA) का गठन परम पूज्य गुरुदेव के बताये आध्यात्मिक मूल्यों को हर क्षेत्र, हर वर्ग तक पहुँचाने के लिए हुआ है। किसी भी पेशे में, किसी भी वय में, किसी भी स्थान पर रहकर आध्यात्मिकता अपनायी जा सकती है यह विश्वास जगाना दिया का मुख्य उद्देश्य है। इस दृष्टि से दिया, मुंबई अखिल विश्व गायत्री परिवार का एक आदर्श संगठन है।

दिया, मुंबई विभिन्न प्रतिष्ठानों में उच्च पदों पर आसीन युवाओं का एक प्रभावशाली संगठन है। वरिष्ठ प्रबंधक, चिकित्सक आदि पदों पर रहते हुए भी वे जनमानस के परिवर्तन के लिए पिछले कई वर्षों से नियमित कार्यक्रम आयोजित करते आ रहे हैं। उच्च शैक्षणिक संस्थानों, विद्यालयों, औद्योगिक संस्थाओं में उनके द्वारा नियमित कार्यशालाएँ की जाती हैं जिनमें वाणी नहीं, व्यवहार से दिया गया उनका शिक्षण श्रोताओं को प्रभावित किये बिना नहीं रहता। वैज्ञानिकों और अधिशासी अधिकारियों के बीच भी उन्होंने अनेक कार्यशालाएँ आयोजित की हैं और उनके संचालन के लिए उनकी शाखा स्वयं सक्षम है।

दिया, मुंबई सेवा-संवेदना के कार्यों में भी सदैव तत्पर रहा है। किसी भी आपदा में वे सहयोग करते दिखाई देते हैं। अनाथालयों में जाकर बुजुर्गों का दर्द बाँटना, सर्दियों में गरीबों को कंबल बाँटना उनका नियमित क्रम है। शांतिकुंज के आह्वान पर हरीतिमा संवर्धन और प्रधानमंत्री जी के आह्वान पर स्वच्छता के लिए जनजागरूकता अभियान चलाने में उनसे जुड़ी शाखा ने बढ़-चढ़कर योगदान दिया है।

13 दिसम्बर 2014 को आयोजित विचार क्रांति सेमीनार की तरह के विशाल आयोजन वे नियमित अंतराल में आयोजित कर मुंबईवासियों में नवचेतना का सतत संचार करते रहे हैं। युवाशक्ति के पथ प्रदर्शक आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी इन कार्यक्रमों में उपस्थित होकर युवाओं का उत्साहवर्धन करने में सदैव तत्पर रहे। जतीन दवे, डॉ. वरुण मानेक, सुजाता सोपारकर, हितेश जोशी, उपेन्द्र चौबे, शुचिता शेट्टी, अनुप्रिया देखमुख, मिनल मित्तल, महेन्द्र पटेल, समीर महेश्वरी, अंजू रावत, श्रद्धा साहू, निश्चल, निशा त्रिवेदी, शशि सिन्हा, श्रद्धा एवं विजय पटले, ज्योति एवं राहुल त्रिपाठी, तेजस, अमर वाघानी और अनेक नवयुवक इस संगठन के प्रमुख सूत्रधार हैं। **संपर्क करें-** mumbai@diya.net.in

देसंविवि के विद्यार्थियों की नाट्य एवं योग प्रस्तुति

'वंदे मातरम्' नाटिका ने बतायी समय की माँग

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के छः विद्यार्थियों का दल अपने अभिनय से विचार क्रांति का संदेश देने के लिए पहुँचा था। इसके अंतर्गत नेपथ्य से भारत माता का अपनी व्यथा के साथ आगमन होता है, अपने स्वरों में गहरी वेदना लिये-बाहर भी कोलाहल, अंदर भी कोलाहल। माता की वेदना को शांत करने के लिए कृष्ण, चाणक्य, रानी लक्ष्मीबाई, महाराणा प्रताप जैसे कई अवतार और महापुरुष आते हैं और अपनी-अपनी तरह से उनकी वेदना को दूर करने का आश्वासन देते हैं। माता को उन पुराने तरीकों में अपनी पीड़ा का समाधान नजर नहीं आता। वह उन्हें रक्तपात से समाधान करने की बजाय सो जाने का आदेश देती है।

अंत में पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी आते हैं और आज की तमाम समस्याओं के समाधान के लिए लोगों के विचार बदलने का आश्वासन देते हैं। माता को अपनी समस्या का समाधान होता नजर आता है। वह लोगों से इस अभियान को अपनाने का आग्रह करती है।

योग प्रस्तुति : देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने मंच पर कई कठिन योगासनों का प्रदर्शन किया। यह स्वास्थ्य, स्फूर्ति के संदेश के साथ संक्षेप में देसंविवि की शिक्षा नीति और विद्यार्थियों की दक्षता का परिचय कराने वाला था, जिसकी जानकारी आदरणीय डॉ. साहब ने अपने उद्बोधन में दी थी।

एम.टी.एन.एल. में कार्यशाला

परम पूज्य गुरुदेव के विचारों में व्यावहारिक जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान है। इसीलिए वह प्रबुद्ध वर्ग, जो कभी अध्यात्म से परहेज करता था, पूज्य गुरुदेव के विचारों के संपर्क में आने के बाद उनके बताये जीवन सूत्रों को अपनाने के लिए उत्साहित है। औद्योगिक प्रबंधन और कार्यक्षमता के विकास में भी ये विचार बड़े प्रभावी सिद्ध हो रहे हैं।

दो माह पूर्व एम.टी.एन.एल. दिल्ली के अधिकारियों की एक कार्यशाला को शांतिकुंज के युवा प्रतिनिधियों ने संबोधित किया था। उसी से प्रभावित होकर 13 दिसम्बर को सीईटीटीएम, सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, मुंबई में एम.टी.एन.एल. मुंबई के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा भी कार्यशाला आयोजित की गयी। इसमें महाप्रबंधक और चीफ विजिलेंस ऑफिसर सहित 120 वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री अंकुर मेहता, श्रीमती मंजरी मेहता, श्री सुश्री दीनाबेन त्रिवेदी, दिनेश पटेल ने उनके साथ चर्चा की।

तनाव प्रबंधन, रिश्तों में आत्मीयता का अभाव, जीवन में शांति का अभाव जैसी अनेक समस्याओं के गुरुदेव द्वारा दिये समाधान प्रस्तुत किये गये। उपासना, साधना, आराधना से आत्मबल की वृद्धि तथा घर, परिवार और समाज-संस्थान में बढ़ते प्यार, सहकार, सामंजस्य के उदाहरण प्रस्तुत किये गये। सभी गुरुदेव के वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के साथ मिशन के उद्देश्य और गतिविधियों की जानकारी पाकर गद्गद थे। मिशन से प्रभावित अधिकारियों ने बड़ी मात्रा में साहित्य खरीदा।

-: प्रमुख संपर्क सूत्र :-
(समय प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक)
डिस्पैच विभाग : 9258360665
email : dispatch@awgp.org
हिसाब-किताब : 9258369725
email : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार संपादन : news@awgp.in

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा सेंचुरी ऑफसेट प्रिंटर्स, ऋषिकेश में मुद्रित। संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय, पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866

RNI-NO.38653/ 80
R.No.UA/DO/DDN/ 16 /2015-17
LICENCE TO POST
W.O. PREPAYMENT
vide No. WPP/04
RENEWED 2015- 2017

भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्वों के प्रति गौरवबोध कराते साधना प्रधान आयोजन

108 साधकों ने की विशेष साधना
महापुरुषों की झाँकियाँ थीं कलश यात्रा का मुख्य आकर्षण

जतारा, टीकमगढ़ (म.प्र.)

16 से 19 नवंबर की तारीखों में जतारा में आयोजित 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ समूह साधना वर्ष की गरिमा के अनुरूप सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम से पूर्व 108 साधकों से विशेष साधना करायी गयी। प्रज्ञा मंडल, महिला मंडल के सदस्यों ने पीले अक्षतों के साथ घर-घर आमंत्रण पहुँचाकर लोगों को युग निर्माण आन्दोलन में भागीदार बनाने के प्रशंसनीय प्रयास किये।

कलश यात्रा में शामिल बहिनों का स्वागत करती शांतिकुंज की टोली

कार्यक्रम शानदार सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इसकी विशाल कलश यात्रा में 551 पीतवस्त्रधारी बहिनों ने भाग लिया। गायत्री माता की झाँकी, घोड़ों पर सवार रानी लक्ष्मीबाई, दुर्गावती, झलकारी बाई, महाराणा प्रताप, विवेकानंद की झाँकियाँ हर नगरवासी एवं श्रद्धालु को सांस्कृतिक गौरव का बोध कराती रहीं। परंपरागत वाद्ययंत्र रमतूला, शंख, झालर के निनाद के बीच 24 प्रज्ञा वाहिनी देव कन्याएँ हाथों में ध्वज लिये और 24 बच्चों की वाहिनी युग निर्माण आन्दोलन की अलख जगाते चल रही थी।

यह कार्यक्रम शांतिकुंज से पहुँची श्री प्रदीप अवस्थी एवं श्री रमाकांत खरे की टोली ने सम्पन्न कराया। देव संस्कृति के आधारभूत तत्त्व-गौ, गंगा, गीता, गायत्री और गुरु के प्रति आस्था जगाने वाले युग निर्माणी संदेश ने सनातन संस्कृति के प्रति आस्था जगायी। विशाल दीप महायज्ञ ने समाज निर्माण की विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों में शामिल होकर अपने समाज के उन्नयन के संकल्प जगाये। संस्कार भी बड़ी संख्या में हुए।

पूरा कार्यक्रम समूह भावना के साथ सम्पन्न हुआ। नगर प्रशासन का भी प्रशंसनीय सहयोग मिला।

शक्तिपीठ की प्राण प्रतिष्ठा हुई

बीकानेर (राजस्थान)

गायत्री शक्तिपीठ कृपाल भैरूं मंदिर, सर्वोदय बस्ती बीकानेर की प्राण प्रतिष्ठा 3 से 6 नवम्बर की तारीखों में भव्य 11 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ हुई। शांतिकुंज से पहुँची श्री नरेन्द्र ठाकुर, श्री प्रेमलाल बिरला और श्री चंद्रप्रकाश भानु की टोली ने कार्यक्रम संचालन करने हुए हजारों लोगों को गायत्री उपासना से जीवन को मानवीय गरिमा के अनुरूप सँवारने की प्रेरणाएँ प्रदान कीं।

प्राण प्रतिष्ठा समारोह अत्यंत उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। तीन-चार सौ भाई-बहिनों ने दो किलोमीटर की विशाल कलश यात्रा में भाग लेते हुए पूरे क्षेत्र को जोश और उल्लास से भर दिया। तीनों दिन विश्व कल्याण की कामना के साथ यज्ञाहुतियाँ समर्पित करायी गयीं, वहीं शांतिकुंज प्रतिनिधियों ने व्यावहारिक जीवन में अध्यात्म के समावेश के लिए सरस शिक्षाएँ भी प्रदान कीं।

अंतिम दिन टोली विदाई के अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य संयोजक श्री आर.बी. यादव, प्रमुख सहयोगियों और मूर्ति दानदाताओं को ज्ञानपीठ के वरिष्ठ सदस्यों और कार्यकर्त्ताओं द्वारा सम्मानित किया गया।

ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली ने बताया आज की समस्याओं का समाधान

प्रज्ञा पुराण कथा कहती श्रीमती सुशीला अनघोरे की टोली

साढ़ा, छपरा (बिहार)

साढ़ा स्थित राम जानकी भूमि पर गायत्री परिवार की छपरा शाखा द्वारा 24 कुण्डीय महायज्ञ एवं पावन प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन किया गया। शांतिकुंज से पहुँची ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली ने प्रज्ञावतार के स्वरूप के दिग्दर्शन कराये। श्रीमती सुशीला अनघोरे ने भगवान विष्णु और देवर्षि नारद के संवाद के रूप में आज की दुःखदायी समस्याओं का विश्लेषण किया। उन्होंने अनास्था, प्रत्यक्षवाद, अदूरदर्शिता, असंयम जैसे अशरीरी दानवों को समस्त दुःखों का कारण बताया और उनके निवारण के लिए गायत्री उपासना के माध्यम से सोये देवत्व को जगाने की प्रेरणा दी।

2 से 7 नवम्बर तक चले महायज्ञ में दिव्य कलश यात्रा ने आध्यात्मिक उल्लास का संचार किया, वहीं शांतिकुंज की टोली ने योग प्रशिक्षण, संस्कार, यज्ञ, दीपयज्ञ के माध्यम से जनमानस को बदलने के प्रयास किये। प्रमुख शाखा परिजन सर्वश्री गणेश चौरसिया, विष्णु दयाल, श्यामबिहारी पाण्डे, जनार्दन सिंह, हरेन्द्र सिंह आदि ने क्षेत्रीय समर्पित कार्यकर्त्ताओं के अथक सहयोग से कार्यक्रम को उद्देश्यपूर्ण और सफल बनाने में विशेष योगदान दिया।

गुरुदेव-माताजी के जीवन संस्मरणों से भावविभोर हुए श्रोता

पीलीभीत (उ.प्र.)

13 से 16 अक्टूबर 2014 में बीसलपुर में बालाजी की मढ़ी प्रांगण में विशाल एवं भव्य गायत्री महायज्ञ एवं समूह साधना कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर शान्तिकुंज प्रतिनिधि श्री विनय केसरी ने परम पूज्य गुरूदेव-परम वंदनीया माताजी के जीवन के प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से गायत्री और यज्ञ की महत्ता बतायी। उन्होंने गायत्री एवं यज्ञ द्वारा मानव में देवत्व एवं धरती पर स्वर्ग के अवतरण पर विस्तार से प्रकाश डाला। नारी के गौरवशाली इतिहास की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि जब बहिनों को अपने गौरव का बोध होगा, तभी नारी शक्ति का अभ्युदय संभव होगा। गौ, गंगा, गायत्री की भी उन्होंने विस्तृत व्याख्या की।

कार्यक्रम में स्थानीय वरिष्ठ परिजन श्री सत्यपाल सिंह यादव द्वारा विद्यार्थियों के नैतिक उत्थान के लिए विद्यालयों में चलाये जा रहे कार्यक्रमों की उपस्थित सभी आचार्यो, प्रधानाचार्यों ने भूरि भूरि प्रसंशा की। कार्यक्रम में पुंसवन, मुण्डन, विद्यारम्भ, दीक्षा आदि संस्कार बड़ी संख्या में सम्पन्न हुए। कार्यक्रम में नगर पालिका अध्यक्ष एवं प्रमुख समाजसेवी छेदालाल जायसवाल की उपस्थिति एवं उनका योगदान सराहनीय रहा। उन्होंने ऐसे आयोजनों को हर वर्ष कराने का भाव भरा संकल्प लिया।

गौ, गंगा, गीता, गुरु, गायत्री की महिमा बतायी

बुढाना, मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)

गौ, गंगा, गायत्री के संरक्षण का उत्साह बढ़ाने का लक्ष्य लेकर बुढ़ाना शाखा द्वारा दो दिवसीय पंच कुण्डीय यज्ञ आयोजन किया गया। 9 एवं 10 अक्टूबर को आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन श्री सोमपाल सिंह की टोली ने किया। उन्होंने कहा कि समाज, संस्कृति और संस्कारों की उपेक्षा से ही व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में तरह-तरह की विसंगतियाँ पैदा हुई हैं। हम इनका समाधान चाहते हैं तो पत्तों को नहीं, जड़ों को ही सींचना होगा। गौ, गायत्री, गंगा हमारी संस्कृति का आधार हैं और इनके संरक्षण का दायित्व प्रत्येक नागरिक का है। यज्ञ में आसपास के कई गाँवों के परिजनों भाग लेते हुए विश्वशांति की कामना से यज्ञाहुतियाँ समर्पित कीं।

कुंवरगाँव, बदायूँ (उ.प्रदेश)

दिगोई में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ समूह साधना प्रधान कार्यक्रम आयोजित हुआ। शांतिकुंज से पहुँची टोली के नायक श्री संदीप पाण्डेय ने भारतीय संस्कृति के आधार-गौ, गंगा, गीता, गायत्री की महिमा बतायी। उन्होंने बचपन से ही बच्चों को गायत्री उपासना सहित इन आधारभूत तत्वों के प्रति आस्था जगाने की प्रेरणा दी। संस्कारों की महत्ता बतायी गयी। बदायूँ की टोली ने समयदान कर रहे कार्यकर्त्ताओं का सम्मान किया। अलापुर के रघुनाथ जी द्वारा लगायी गयी प्रदर्शनी को हजारों लोगों ने देखा, सराहा और प्रेरणा पायी। नाधा से आयी टोली ने जूते-चप्पल की व्यवस्था सँभालकर सेवा भावना का परिचय दिया।

मस्कत में निरंतर हो रहे हैं यज्ञ आयोजन

मस्कत (ओमान)

खाड़ी देश के सुप्रसिद्ध नगर मस्कत में अनेक भारतीय परिवार गायत्री और गुरुदेव के प्रति गहन आस्था रखते हैं। उन्होंने अपने परिवारी जनों में साधना और संस्कारों के विस्तार के लिए साप्ताहिक स्वाध्याय, सत्संग, यज्ञादि का नियमित क्रम बना रखा है। यह क्रम प्रत्येक शुक्रवार को चलता है।

श्रीगंगानगर जिले में दीपावली जैसा उल्लास

देसंविवि के विद्यार्थियों की आकर्षक प्रस्तुति

लाधूवाला, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की टोली ने लाधूवाला में पहली बार पंच कुण्डीय यज्ञ का आयोजन कर पूरे नगर में दिव्य उत्साह का संचार कर दिया। 25 से 27 अक्टूबर की तारीखों में आयोजित इस कार्यक्रम में पुस्तक मेला, योग शिविर, चिकित्सा शिविर जैसी लोकोपयोगी गतिविधियाँ शामिल थीं, वहीं युवा पुरोहितों द्वारा संचालित यज्ञ एवं दीपयज्ञ के माध्यम से आध्यात्मिकता का अभिनव स्वरूप लोगों को देखने को मिला।

पुस्तक मेले में हारिये न हिम्मत, बाल निर्माण की कहानियाँ और स्वास्थ्य संबंधी साहित्य की खूब माँग रही। यज्ञ के समय गाँव में साफ-सफाई रखने, नशे से दूर रहने और वृक्षारोपण करने के संकल्प लेने वाले सैकड़ों हाथ उठे। अनेक लागों ने दीक्षाएँ लीं। दीपावली तो लोग खूब मनाते हैं, लेकिन हर घर से पाँच दीपक लाकर ठाकुरजी मंदिर, गुवाड़ क्षेत्र में दीपयज्ञ के अवसर पर प्रज्वलित दीपमालाएँ एकता, समता, समरसता का अलग ही संदेश दे रही थीं। कार्यक्रम का संचालन श्री जयराम मोटलानी के नेतृत्व में विवि. के छात्र सुनील सहारण, रोशन, सुनील, रजत, मनोज, नंदकिशोर ने किया। स्थानीय सर्वश्री जगदीश सहारण, जेपी चौधरी, राकेश नैण आदि स्थानीय परिजनों ने कार्यक्रम की सफलता में अग्रणी भूमिका निभाई।

राष्ट्र जागरण दीप महायज्ञ

श्रीगंगानगर (राजस्थान)

भगवान का सच्चा भक्त कभी उससे माँगता नहीं, सदा उसकी इच्छा को पूरा करने में सहयोगी बनने और उसके लिए स्वयं तप करते हुए कुछ न कुछ देते रहने के लिए उत्साहित होता है। ऐसे भक्तों पर सदा ईश्वर की कृपा बनी रहती है। जिस समाज में भक्ति का ऐसा स्वरूप हो, वह कभी दुःखी, अभावग्रस्त नहीं रह सकता।

23 नवम्बर को श्रीगंगानगर में आयोजित राष्ट्र जागरण दीप महायज्ञ में श्री आर.उपाध्याय एवं श्री गोपाल स्वामी की टोली ने यह संदेश दिया। उन्होंने लोगों को पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, हरीतिमा संवर्धन, तरह-तरह की कुरीतियों के उन्मूलन, ज्ञान विस्तार जैसे कार्यों में भाग लेने को ईश्वर की सच्ची भक्ति बताया और इस आशय के संकल्प भी दिलाये। उन्होंने कहा कि यह समाज और संसार ही ईश्वर का विराट स्वरूप है। इसकी सेवा करना मानव का परम धर्म है।

दीप महायज्ञ में 151 जोड़ों ने हाथ में दीपों से सजे थाल लेकर युग देवता की आरती उतारी। मन-मंदिर में अलौकिक दिव्यता का संचार करने वाला यह मनमोहक दृश्य अद्भुत था।

कोटा के विद्यालयों में चल रहे हैं शैक्षिक कार्यक्रम

कोटा (राजस्थान)

युग निर्माण पुस्तकालय, कोटा द्वारा बच्चों में नैतिक मूल्यों के समावेश-विस्तार के लिए विद्यालयों में नैतिक शिक्षापरक कार्यक्रमों की श्रृंखला चलायी जा रही है। समाचार भेजे जाने तक न्यू आइडियल सैकण्डरी स्कूल, श्रीराम विद्या मन्दिर सैकण्डरी स्कूल, संत जोसेफ स्कूल, आदर्श ज्ञान मंदिर, मां भारती विद्या सैकण्डरी स्कूल आदि में इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित हुए। बच्चों को गायत्री महामंत्र का महत्त्व वैज्ञानिक प्रतिपादन के साथ बताया गया। नशा मुक्ति, भारतीय संस्कृति जैसे विषयों पर व्याख्यान दिये गये। अभी तक 700 स्कूलों में बच्चों संबंधी विभिन्न कार्यक्रम कराये जा चुके हैं। यह क्रम निरंतर जारी हैं।

बाल दिवस पर बाल संस्कार शाला की सांस्कृतिक प्रस्तुति

भुबनेश्वर (ओडिशा)

दिया, भुबनेश्वर द्वारा चलायी जा रही बाल संस्कार शाला ने बाल दिवस पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन कर अपने बढ़ते कौशल, संस्कार, संवेदना और विचारों का परिचय दिया। उल्लेखनीय है कि गायत्री परिवार द्वारा चलायी जा रही इस संस्कार शाला में अनाथ और गरीब बच्चों को शिक्षा दी जा रही है।

नन्हे बच्चों ने सर्व प्रथम समूह नृत्य के साथ वेदमंत्र और गणेश वंदना प्रस्तुत किये। बच्चों द्वारा प्रस्तुत योगासनों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।